❋ द्वितीय अध्याय ❋

साधुराम दर्शक की कहानियों का कथ्य

* द्वितीय अध्याय*

साधुराम दर्शक की कहानियों का कथ्य

प्रस्तावना :

कहानी का मूल संबंध मानवीय जिज्ञासा के साथ हैं। कोई भी साहित्यकार अपने जीवनानुभव के साथ जुड़ी घटनाओं से कथा-सृजन करता है।

कहानी के सभी तत्वों में 'कथावस्तु' प्रधान तथा अनिवार्य तत्त्व है। अंग्रेजी में 'प्लाट' तथा 'थीम' कहते हैं। वास्तव में कथावस्तु ही कहानी का मूल आधार है। कहानी की कथावस्तु का विषय क्षेत्र भी अत्यंत व्यापक लेकिन एक-सूत्री होता है। उसमें वर्ण्य विषय प्रस्तुतीकरण की अपेक्षा कलात्मकता अधिक होती है। कभी-कभी कथावस्तु बहुसूत्री होती है, तो विश्रृंखलित तथा संगठनात्मक की दृष्टि से सदोष होती है। घटनाप्रधान कहानी के स्वरूप निर्धारण का आधार भी कथावस्तु तत्व ही है। कथावस्तु के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए 'उपेन्द्रनाथ अश्क' ने कहा हैं, ''शरीर के लिए जिस प्रकार ढाँचे की आवश्यकता है, उसी प्रकार कहानी के लिए कथानक की।''[1] कथावस्तु में रोचकता, विश्वसनीयता, उत्सुकता, प्रभावात्मकता अन्विति नवीनता, गतिशीलता, शिल्पगत नए प्रयोग आदि गुणों का होना अनिवार्य हैं। जिससे कहानी के सौंदर्य में वृध्दि होती है। अर्थ की दृष्टि से कथावस्तु का अर्थ 'छोटा' या सारांश रूप होता है। लोकगाथा, महाकाव्य, खंडकाव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी आदि में यह तत्व विद्‌यमान होता है और वह घटनाओं का वर्णन होता है। कथावस्तु -

2.1 कथावस्तु : कोशगत अर्थ :

विभिन्न कोशकारों के द्‌वारा 'कथानक' का दिया हुआ अर्थ इस प्रकार है -

2.1.1 मानक हिंदी कोश : सं.रामचंद्र वर्मा

वि. (सं.कथ+यत)

जो कहा जा सके। कहे जाने के योग्य।

जो कहना उचित हो।

2.1.2 प्रामाणिक शब्द कोश : सं.रामचंद्र वर्मा

कथावस्तु-स्त्री (सं.)

उपन्यास या कहानी का ढाँचा (प्लॉट)

2.2 कथावस्तु : परिभाषा :

प्रयोग की दृष्टि से जितनी संभावना कहानी विधा में हैं, उतनी साहित्य की अन्य विधा में नहीं मिलती। कहानी अभिव्यंजना की वह विधा है, जिसके स्वरूप में अनगिनत विविधताएँ समय-समय पर जुड़ती रहती हैं तथा मिटती रहती है।

कहानी विकास के साथ-साथ परिभाषाएँ अपूर्ण अनुभव होने लगती हैं। कोशगत अर्थ देखने के पश्चात् 'कथावस्तु' की परिभाषा इस प्रकार हैं -

सैद्धांतिक स्वरूप के अनुसार - ''कथावस्तु ही प्रारूप है, जो कहानी की निर्मिति में आधारभूत रूप से कार्य करता है।''[2]

2.3 कथावस्तु : महत्त्व :

कथावस्तु को कहानी का अनिवार्य तत्त्व माना गया है। प्रत्येक कहानी में 'कथा' होती है, वह विषय के साथ-साथ कम समय में पूर्णता से अभिव्यक्त की जाती है। कभी कभी 'कथावस्तु' सूक्ष्म होती है जो 'कथ्य' को मनोवैज्ञानिक, सामाजिक घात-प्रतिघातों से स्वाभाविक विकसित करते हुए उनके बीच पात्रों की विशिष्टता में जीते हुए 'कथ्य' की सजीव प्रस्थापना करती हैं। 'कथ्य' का अध्ययन दोनों दृष्टि से किया जाता हैं। पहले आस्वाद संवेदना का जिसमें रस, भाव, अनुभव आदि समाविष्ट है। दूसरा मूल्यगत संवेदना का जिसके अंतर्गत सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक एवं अध्यात्मिक जीवन बोध को प्रस्तुत किया जाता है। शिल्प के माध्यम से कथ्य का गठन किया जाता है।

डॉ.सुरेश सिंह के मतानुसार ''वास्तव में कथानक का स्वरूप एक नदी की भाँति होता है, जिसमें पात्र, घटनाएँ आदि इस प्रकार सहज पर कलात्मक

ढंग से प्रवाहित होते हैं कि बिना किसी अवरोध या गति रूद्धता से पाठक सहज ढंग से अंत में जाकर रूक पाता है और तब उसे ऐसा प्रतीत होता है, कि किसी सत्य या यथार्थ की तीखी प्रतिक्रिया अत्यंत प्रभावोत्पादक ढंग से जैसे उसे उद्वेलित कर रही है और वह अपने को उसके प्रभाव आवशसा पाता है।''[3]

कथावस्तु को आरंभ, मध्य और अंत में विभाजित किया जाता है। कथावस्तु को सफल और कलात्मक बनाने के लिए विविध गुणों की आवश्यकता होती है। जिसमें घटनाएँ यथार्थ जीव को प्रतिध्वनित करती है। इसलिए कहानी के आरंभ से लेकर अंत तक पाठक के हृदय में कौतूहल तथा उत्सुकता होती है। कहानी में आरंभ से अंत तक जीवन और समाज के यथार्थ का चित्रण करना होता है। उसमें सभी गुण, तत्त्व विशेषताओं का आना आवश्यक है। जिस तरह मनुष्य का शरीर पाँच तत्त्वों से बना हैं और उसमें अगर कोई तत्त्व कम पड़ जाए तो वह शरीर बेकार माना जाता है; उसी प्रकार कहानी में किसी तत्त्व की कमी हो तो वह कहानी बेकार मानी जाती है जो जीवन के यथार्थ को स्पष्ट करती है उसे सरस कहानी कहा जाता है।

उपर्युक्त सैध्दांतिक विवेचन के आधार पर साधुराम दर्शक की कहानियों का कथ्य विवेचित किया है।

2.4.1 मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ (कहानी संग्रह):

'मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ' 'दर्शक' का चुनिंदा कहानियों का संग्रह हैं। सन् 1977 में 'संदेश विहार', दिल्ली द्वारा प्रकाशित है। उसमें संकलित कहानियों की विशेषता यही है कि प्रस्तुत कहानियाँ सामाजिक कुरीतियों, जातिगत उत्पीड़न, आर्थिक शोषण, साम्प्रदायिक विद्वेष आदि का यथार्थ चित्रण करती हैं। कहानियों में चित्रित पात्र निम्न वर्गीय लोग हैं। प्रस्तुत कहानी संग्रह में से मैंने सक्षम, सशक्त तथा विविध समस्याओं को उद्घाटित करनेवाली कहानियों का ही 'कथ्य' के लिए चयन किया हैं।

2.4.1.1 ड़ायरी के कुछ पन्ने :

प्रस्तुत कहानी में पारिवारिक समस्या का चित्रण किया है। कहानी

के प्रमुख पात्र 'कपूर साहब' पेंशन के एकाउन्टेंट पद पर नियुक्त है। रूखे और तत्ख स्वभाव के 'कपूर साहब' रक्तचाप के मरीज हैं इसलिए उन्हें अपनी जिंदगी का कोई भरोसा नहीं है।

'कपूर साहब' की तीन संतान हैं - नीलम, बिट्टू और संगीता उन्हें हमेशा अपनी बेटियों की शादी और बेटे के करीयर की चिंता लगी रहती हैं। 'कपूर साहब' ऑफिस में आने के बाद रोज ड़ायरी लिखते हैं। जिनसे उनकी परेशानियाँ का पता चलता हैं। नीलम को लड़केवाले देखने आनेवाले हैं फिर भी 'कपूर साहब' ऑफिस आते हैं, क्योंकि उन्हें लड़कियों को देखना-दिखाना भेड़-बकरियों की तरह लगता है। परंतु समाज के रीति-रिवाजों को मानने के लिए विवश हैं। बिट्टू को वे इंजीनियर बनाना चाहते हैं। परंतु आर्थिक कठिनाइयों से मजबूर होकर उसे बी.एस्.सी करने की सलाह देते हैं। संगीता फाईनल इअर में पढ़ती हैं उसकी शादी की चिंता तथा पत्नी की बीमारी की परेशानी आदि से त्रस्त कपूर साहब अपनी रक्तचाप की बीमारी को अनदेखा करते हैं।

एक दिन ऑफिस में उन्हें पता चलता हैं कि उनके दोस्त की मृत्यु ऑफिस में हो जाने से घरवालों को फंड तथा बेटे को नौकरी मिली है और आज वह परिवार खुशहाल है। तो उन्हें लगता है ''आजकल तो जिंदा रहने से मरने में फायदा हैं।''[4] इस तरह उसी रात उनकी मृत्यु हो जाती है।

तात्पर्य - सामान्य आदमी पारिवारिक समस्या से जूझते हुए इतना ऊब गया है, कि मृत्यु ही उसे छुटकारा पाने का एकमात्र रास्ता नजर आता है। आर्थिक समस्या इंसान के वजूद को मिटा देती है।

2.4.1.2 लगे रहिए मंगतरामजी :

प्रस्तुत कहानी महानगर के जीवन की त्रासदी को उद्घाटित करती है।

मंगतरामजी दिल्ली में तार विभाग में क्लर्क है। वह गंदी गली के छोटे से कमरे में रहता हैं। बार-बार मकान बदलने से वह तंग आ गया हैं। अपने परिवार के लिए अपना घर बनाना चाहता है लेकिन उसकी छोटी सी तनखा में पैसों

को जुटाना मुश्किल हैं। शादी के बाद भी वह उसी मकान में रहता है। परंतु घर बनाने का सपना वह भूलता नहीं है।

मंगतरामजी की बहन सुधा दिल्ली आती है, उसे भी ड़ाक-विभाग में नौकरी लगती हैं। अब घर में कमानेवाले दो हो जाते हैं, तो मंगतरामजी को कुछ आशा बंधी रहती हैं। मंगतरामजी भी अब पैसे बचाने की कोशिश करता है। रिक्शा, बस के बजाय पैदल दफ्तर जाता हैं, बाहर चाय तक नहीं पीता। पैसों का इंतजाम होते ही मित्र की सहायता से एक छोटा प्लॉट भी खरीद लेता है। लेकिन तभी सुधा की शादी तय होती है। मंगतरामजी के पैरों तले जमीन खिसक जाती है। अपना सपना पूरा करने के लिए वह सुधा की शादी तोड़ देता है। सुधा इस सदमें को सह नहीं पाती और वह अपने गाँव लौट जाती है। मंगतरामजी पश्चाताप की खाई में जलता रहता हैं।

एक दिन उसे पता चलता है कि उसने खरीदे हुए प्लॉट पर किसी दूसरे आदमी ने मकान बनवाया है। भयभित तथा त्रस्त मंगतरामजी पुलिस, मित्र, मकान मालिक सभी की मदद लेता है, परंतु मकान बनाने का सपना अधूरा रह जाता है।

तात्पर्य – मंगतरामजी के माध्यम से यह दर्शाया है कि आर्थिक अभाव व्यक्ति को खुदगर्ज और कमीना बनाता है। साथ ही दिल्ली शहर में ठगे जानेवाले आदमी की जीवन की त्रासदी का चित्रण किया है।

2.4.1.3 ड़ायन :

प्रस्तुत कहानी में विधवाओं के प्रति सामाजिक क्रूरता मुखरित हुई है।

कहानी की नायिका गीता बालविधवा है। उसके पति की क्षय रोग से मृत्यू हो गई हैं। तेरह साल की गीता का दूसरा विवाह करना परिवारवाले अनुचित समझते हैं। समाज के बंधनों को निभानेवाले गीता के घरवाले विधवाओं को जीवनयापन के मार्ग बतानेवाले धर्मग्रंथ पढ़ने के लिए देते हैं। ताकि वह कभी कोई गलत कदम उठा न सके। लेकिन गीता हमेशा उदास सहमी-सहमी रहती है।

उसके चेहरे पर खुशी देखने के लिए परिवारवाले तरस जाते हैं।

एक दिन 'दर्शन' नाम का लड़का उनके घर आता है। गीता लड़के से घुल-मिल जाती है। उसे लगता हैं कि अपने जीवन में नया सवेरा आया है। गीता 'दर्शन' से प्यार करने लगती है। एक दिन घर में पता चलता है कि गीता दर्शन के बच्चे की माँ बननेवाली है। उस रात गीता को खूब मारा-पीटा जाता है और उसे बच्चा गिराने के लिए मजबूर किया जाता है अतः उसी में उसकी मौत हो जाती हैं।

तात्पर्य - सामाजिक अमानवीय परंपराओं के खातिर मासूम विधवाओं को बलि चढ़ाई जाती हैं।

2.4.1.4 जिंदा-मुर्दा :

प्रस्तुत कहानी आज की उग्र समस्या आतंकवाद के अभिशाप से पत्थर बने हुए लोगों की है।

कहानी का पात्र एक ऐसा आदमी है, जो अपने बेटे को डाक्टर बनाकर गरीब-बेबस लोगों का मुफ्त में इलाज करना चाहता है। पत्नी के गुजर जाने के बाद उसका लड़का ही उसके लिए सबकुछ है। उसी के लिए जीना उसी के लिए मरना। बेटा भी अपने पिता से बेहद प्रेम करता है। लेकिन एक दिन उसका डाक्टरी पास बेटा शहर के आतंकवादी हमले में मारा जाता है। यह सदमा वह बर्दाश्त नहीं कर सका। लेखक का कथन यहाँ पर समर्पक है, ''लेकिन जनाब, वह तो मर चुका था। मर कर पत्थर हो गया था। जड हो गया था।... और मुर्दे कभी नहीं रोते, कभी नहीं।''[5] अर्थात बेटे की मौत एक पिता के दिल पर गहरी चोट का असर करती है।

तात्पर्य - लेखक ने कहानी के माध्यम से देश की सच्चाई को उजागर किया है। एक तरफ भूख, बीमारी है तो दूसरी तरफ आतंकवादी और आतंकवाद के परिणाम को दर्शाया है।

2.4.1.5 पिशाच्च-लीला :

'पिशाच्च-लीला' कहानी जातियगत झगड़ों को उद्घाटित करती हैं। कहानी के पात्र बिरजू समाज में सम्मानजनक स्थान पाने के लिए उस समय से

लढ़ाई लड़ रहा है, जब उसे ठीक से पता भी नहीं चला होगा कि जात-पात क्या बला है। उसे बचपन में ही पता चला था कि उच्चवर्णिय समाज में अपनी जगह बनाना आसान बात नहीं हैं। फिर भी बिरजू बार-बार कोशिशे करता रहता है। लेकिन उसे इस समाज से नफरत, उपेक्षा तथा जिल्लतभरी जिंदगी मिलती हैं।

एक दिन बिरजू राजपूत जाँति की स्त्री से शादी करता हैं। इसीका परिणाम राजपूत जाँति के लोग बिरजू और उसकी पत्नी को मारकर झोपड़ी में बंद करते हैं। और झोपड़ी को आग लगाते हैं। बिरजू और उसकी पत्नी की चिता की आग तो ठंडी हो गयी लेकिन वर्णव्यवस्था की यह आग आज भी जलती हुई नजर आती है।

तात्पर्य - जातियता के नाम पर बलि चढ़े लोगों की दर्दनाक व्यथा बिरजू और उसकी पत्नी के माध्यम से दर्शायी है। समाज में फैली वर्णव्यवस्था, जात-पात, उँच-नीचता को मिटाने के लिए म.फुले, छ.शाहू, डॉ.आंबेडकर जी जैसे कितने महामानवों ने कोशिशे की हैं। लेकिन फिर भी आज जातियता के नाम पर बलि चढ़नेवाले लोगों की संख्या में कमी नहीं हैं।

2.4.1.6 कुत्ता-जिंदगी :

प्रस्तुत कहानी में बेकारी की समस्या को उद्घाटित किया है। आज हमारे देश में लाखों-हजारों नौजवान शिक्षा पाकर भी निकम्मों की पंक्ति में आ जाते हैं।

रमेश कहानी का प्रमुख पात्र है। कॉलेज में उसने प्रोफेसर बनने के कई सपने देखे थे। शिक्षा पूरी होने के बाद कोई भी बिना सिफारिश के नौकरी देने के लिए तैयार नहीं है। घर में उसे उपेक्षाभरी नजरे और जिल्लतभरी जिंदगी मिलती है। बेकार की जिंदगी से तंग आकर रमेश दो मामाओं के शरण में आता है। लेकिन मामा भी उससे कुत्ते से भी गया-गुजरा व्यवहार करते है। एक वक्त एक मामा से रोटी मिलती है और दूसरे वक्त दूसरे मामा से, वैसे ही रमेश को भी बाँट लेते हैं। रमेश सपने देखता है कि ''उसका जिस्म कुत्ते के शरीर में बदल गया है और दोनों मामा उसे दुत्कार रहें हैं... दूर...दूर...दूर।''[6]

एक दिन रमेश आत्महत्या करने निकलता है परंतु इस दुनियाँ में लोग जीने के लिए किस तरह अपनी समस्याओं से जूँझकर जीते हैं। एक ग्यारह साल का लड़का अपनी शिक्षा पूरी करने के लिए चने बेचने का काम करता है। खुद बेसहारा होकर भी जिंदा रहने की कोशिश करता है। जीवन की समस्याओं का मुकाबला करते हुए जीनेवाले लोगो को देखकर रमेश को जीने की प्रेरणा मिलती है। उसे अपने विचारों से घृणा आती है।शर्म महसूस करता है कि वह नौजवान होकर किसी को सहारा देने के बजाय खुद सहारे की अपेक्षा रखता है और उसमें आत्मविश्वास, स्वाभिमान जागृत होता है।

तात्पर्य - प्रस्तुत कहानी में बेरोजगार, बेकार नौजवान की समस्त मानसिकता का वर्णन किया है वे कहानी के अंत में जिंदगी से हार न मानकर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है।

2.4.1.7 शाही-खेल :

प्रस्तुत कहानी में अपराध का एक अन्य रूप उजागर हुआ है। जो अपराध पुलिस एवं राजनेताओं के परस्पर संबंध-सूत्रों की ओर संकेत करता है।

नंगल गांव के गुलजारी और उसकी माँ दोनों में बनती नहीं हैं। एक दिन गुलजारी की माँ जंगल में घास लाने जाती है तभी मंत्रियों के बेटों की गोली का शिकर होती हैं। उसी दिन से गुलजारी की माँ की लाश गायब हो जाती है। पुलिस गुलजारी को माँ की हत्या करने के जुर्म में थाने ले जाती है। गुलजारी की पत्नी संतो घबरा जाती है और सच्चाई की तरफ से लढ़ने वाले रामसिंह चौधरी को सारी बातें बताती हैं। रामसिंह चौधरी अपनी तरफ से पूरी कोशिश करता है, मुख्यमंत्री तथा सहमंत्री से भी मुलाकात करता है। लेकिन हर जगह उन्हें एक ही जवाब मिलता है- ''गुलजारी पर अपनी माँ की हत्या का संदेह हैं। तफतीश जारी है...''[7] रामसिंह चौधरी, संतो के साथ गाँववाले भी इन्साफ के लिए थाने के बाहर धरना धरे बैठते हैं। गुलजारी की माँ की मौत की जाँच करने के लिए उच्चअधिकारी द्वारा आदेश मिलता है। आखिर में जीत सच्चाई की होती हैं, गुलजारी को छोड़ दिया जाता है। लेकिन थाने में उसकी इतनी खातिरदारी की जाती है कि घर आने के बाद उसकी

मृत्यु होती है।

तात्पर्य - पुलिस और राजनेताओं से आम जनता पर होनेवाले अन्याय का चित्रण बड़ी मार्मिकता से किया है। यहाँ पर अवसरवादी भ्रष्ट राजनीति का चेहरा दिखाई देता हैं।

2.4.1.8 पंछी बाबा :

प्रस्तुत कहानी सांप्रदायिकता और आतंकवाद के कुकृत्यों का पर्दा फाश किया है।

कहानी के पात्र आदरणीय 'पंछी-बाबा' सिक्ख धर्म के मानवतावादी इंसान है। जिसने अपनी सारी जायदाद अपने परिवार में बाँटकर अपने हिस्से के पैसों से एक बगीचा और मकान बनवाया हैं। जहाँ पर सभी धर्मों के लोगों का स्वागत होता है, थके-माँदे मुसाफिरों को खाना, पंछियों को दाना-पानी रोज मिलता है। सभी प्राणी मात्रा पर प्रेम, दया के भाव दिखाना आदि गुणों से युक्त होने के कारण उन्हें पंछी-बाबा कहते हैं। गाँव में डाक्टरी पढ़ाने का कॉलेज निकालने का उनका सपना है, यह सपना साकार करने के लिए वे दिन-रात एक करते हैं लेकिन एक दिन ख़बर मिलती है कि ''कल शाम पंजाब के गांव के आतंकवादियों ने एक बगीची के मालिक सत्तर साल के वृध्द, सरदार नानक सिंह उर्फ पंछी-बाबा की गोली मारकर हत्या कर दी। पता चला है पंछी बाबा बहुत दिनों से आतंकवादियों की हिट-लिस्ट पर थे, क्यों कि उनके द्वारा निर्दोष लोगों की निदर्यतापूर्ण हत्याएं करने का सख्त विरोध करते थे।''[8]

तात्पर्य - कहानी में मानवतावादी व्यक्ति की हत्या आतंकवादियों के क्रूर कृत्यों की गवाही देता हैं।

2.4.1.9 एक वीतरागी के नोट्स :

प्रस्तुत कहानी में घर की अनेक समस्याओं का चित्रण किया हैं।

घर का मुखिया अगर वीतरागी, बिना काम के फिरें तो घर की जिम्मेदारियाँ निभाने में असमर्थ रहता हैं। जो लोग बैरागी समझकर घर की तरफ

अनदेखा करते हैं, वे किसी भी समस्या का हल नहीं निकाल सकते है। घर का मुखिया लोगों की समस्याओं से मुँह मोड़कर ताश-पत्तों में अधिक समय बिताता है। छोटू अपने बुरी हरकतों के कारण जेल गया है, निक्की के ससुरावाले दहेज न मिलने पर निक्की को मायके में छोड़ते है इसलिए उनका मानसिक संतुलन बिगड़ा हैं। घर में जगह नहीं है, तो पिताजी की खटिया सराह में ड़ाल दी है। एक दिन वह भी वृध्दाश्रम जाते हैं। इन सारी समस्याओं का मूल आर्थिक समस्या हैं और ऐसे में सब लोग अपनी-अपनी जिंदगी जीते हैं। जैसे यही उनका रोज का कार्य हैं।

तात्पर्य - कहानी में गरीबी प्रमुख समस्या है और इस समस्या से जूझते हुए वीतरागी बने लोगों की है।

2.4.1.10 सांपन :

प्रस्तुत कहानी में पति को बचाने के लिए एक माँ अपनी अबोध बेटी को बेच देती हैं। माँ की मानसिकता और साथ ही आर्थिक समस्या को संवेदना के साथ चित्रित किया है।

कहानी की प्रमुख पात्र रामकली दिन भर चौका बर्तन करके अपने पति और बच्चों का पेट पालती हैं। उसका पति माधों बीमार है, उसके दवा-दारू का खर्चा भी उसे ही उठाना पड़ता है। बड़े बेटे को नौकर के तौरपर एक साल के लिए किसी ऊँचे कुल के घर में रखा है। फिर भी कर्जे का बोझ बढ़ता ही नज़र आता हैं। घर का किराया छह महिनों से दिया नहीं, घर मालिक कभी-भी घर से निकाल सकता है, एक दिन काम न जायें तो रात के लिए खाना मिलना मुश्किल है। ऐसी हालत में रामकली किस-किस का मुँह बंद करें कहाँ से लाये पति के लिए अच्छा खाना, दवा-दारू घर की हालत से रामकली तंग आ गई है।

एक दिन मकान मालिक 'गेरा साहब' घर आता है। रामकली के सामने बेटी को बेचने का प्रस्ताव रखता है,''रामकली अमरीका वगैरा पश्चिमी देशों में कुछ अमीर लोग ऐसे हैं, जो शादी तो कर लेते हैं, लेकिन बच्चे पैदा करना उन्हें पसन्द नहीं होता। बच्चे वे गोद लेते हैं। और जरासा सांवला रंग लिए हिन्दुस्तानी बच्चे उन्हें बहुत अच्छे लगते हैं। ऐसा ही एक जोड़ा आया हुआ है शहर

में आजकल। उन्हें बच्चा गोद लेना है। लड़की। बहुत अमीर हैं वे लोग। और जैसा बच्चा उन्हें चाहिए, वे सभी गुण तुम्हारी बच्ची में है। बस तुम्हारे हां करने की देर हैं कि तुम्हारी बच्ची बन जायेगी रानी और तुम बन जाओगी धनवान।''[9] पहले तो रामकली के अंदर की माँ यह सौदा स्वीकार नहीं करती है, उसके दिल कितने ही भयानक, डरावने ख्वाब आते हैं। लेकिन घर की दुरावस्था देखकर माँ का मन हार जाता है। वह सोचती बड़ी होकर किसी गरीब की पत्नी, भिखारिन अथवा वेश्या बनने से आज उसे बेचने में भलाई है और मजबूर होकर एक माँ अपनी बच्ची को बेच देती है। आखिर में ''सांपन अपने बच्चों को पैदा होते ही उन्हें खा जाती है। न जाने यह बात ठीक है कि नहीं...।''[10]

तात्पर्य - कहानी में एक माँ की आंतरिक पीड़ा को बड़ी संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। साथ ही आर्थिक दयनीयता के कारण मजबूर माँ को दर्शाया है।

2.4.1.11 नन्हा गुलाब, बूढा खार :

प्रस्तुत कहानी हिंदू-मुस्लिम विद्वेष की समस्या पर करारी चोट करनेवाली है।

कहानी का केंद्रीय पात्र 'खारदीन' मुसलमान है, जिसका ससांर में कोई नहीं हैं। जब कोई उसे पाकिस्तान जाकर रहने की सलाह देता है तो वह एक ही जवाब देता है ''मजहब दूसरा होने से क्या जन्मभूमि दूसरी हो जाती है?''

खारदीन के मकान के सामने ब्राह्मण कुटुंब रहता है। ब्राह्मण के चार साल के लड़के से सत्तर साल के खारदीन की गहरी मित्रता होती है। घुड़ सवारी, आँख-मिचौनी, छुआ-छुई, देश-प्रेम की कहानियाँ उन दोनों में खूब चलती हैं। एक दिन खारदीन की बनाई सेवईयाँ खाने की जिद् गुलाब करता है। तब से गुलाब के पिता खारदीन के उपर धर्म भ्रष्ट करने का इल्जाम लगाते हैं। अपने बेटे से खारदीन का मिलना-जुलना बंद करते हैं। ऐसे ही दिन गुजरते जाते हैं। खारदीन दूर से गुलाब को देखकर संतुष्ट होता रहता है।

एक दिन बालक गुलाब सख्त बीमार पड़ता है। खारदीन डाक्टर से गुलाब की बीमारी के बारे में पूछता है। तो डाक्टर बताते हैं कि ''पंडित जी बेवकूफ

हैं। उनका विश्वास है कि तुमने लड़के पर जादू चलवाया है। न जाने यह जहालत कब खत्म होगी देश से। वे झाड-फूंक, गृहनक्षत्र में लगे रहे और उधर लड़के की बीमारी बढ़ गयी। डबल निमोनिया हो गया है उसे। दुर्भाग्य की बात यह है कि मेरे पास टीके समाप्त हो गये है। संतोषगढ़ में टीके मिल सकते हैं। लेकिन इस अंधेरी, तूफानी रात में छः मील जंगली पहाड़ी मार्ग और बाढ़ पर आयी नदी पार करके वहाँ से टीके कौन ला सकता है? वर्षा यदि रूक गयी, तो टीके आ सकते हैं। लेकिन कल तक...? बहुत मुश्किल है... बहुत मुश्किल।''[11]

तात्पर्य - लेखक ने मानवीय संवेदनाओं के साथ हिंदू-मुस्लिम द्वेष और अंधश्रद्धा के कारण कुचली जा रही मानवतावादी भावना का चित्रण किया है।

2.4.1.12 एक पोटली अनाज :

प्रस्तुत कहानी में उच्चवर्णिय लोग किस तरह गरीबों, दलितों पर अन्याय, अत्याचार करते है। पूँजिपति लोग अनपढ़ लोगों को लूटते हैं। इसका यथार्थ वर्णन कहानी में है।

कहानी का नायक करमा महर दलित पात्र है। उसके घर पहली बार भैंस आयी है। जिसे देखकर घर के सभी छोटे-बड़े आनंदीत है। उसी दिन गाँव का शोषक बाबूराम अपने चमचे सरपच के साथ आता है और कहता है - ''बात यह है करमा महर'', सरपंच ने आगे कहा,''छोटे डाक्टर साहब (बाबूराम के लड़के), जो शहर में अंग्रेजी डाक्टरी पढ़ते हैं, छुट्टी पर घर जानेवाले हैं। हकीम साहब की भैंस सूख चली है। इन्हें नया दूध (ताजा ब्याई) भैंस चाहिए... और तुम्हारी कल ही सूयी है...।''[12] और इस तरह जबरदस्ती करमा महर के द्वार की भैंस खोलकर ले जाते हैं। उपर से पहले के कर्जे का मूल-ब्याज मिलाकर ऐसा हिसाब लगाते हैं कि भैंस बेचकर भी कुछ कर्जा बाकी रहता हैं।

एक दिन करमा के घर खाने के लिए कुछ नहीं होता, तो बाबूराम के खेतों में दिन भर भूखा-प्यासा रहकर काम करता है। फिर हिसाब लिखवाकर तीस मन मकई तुलवा देता है। घर लौटते समय रास्ते में करमा को कारखाने की वज़ह गांव-गांव भटकते लोगों का झूंड दिखाई देता है। भूखे, प्यासे, नंगे, बाल-बच्चों

को देखकर करमा अपनी भूख-प्यास भूल जाता है। उसका मन दया से भर आता है और अपने पास जो भी अनाज है उसमें से आधे से अधिक अनाज उन लोगों को दे देता है, करमा की दया का देखनेवाले लोगों पर भी असर होता हैं। सब लोग करमा की कृति का अनुकरण करने लगते हैं।

तात्पर्य - शोषक एवं शोषितों की मानसिकता को उद्‌घाटित करते हुए करमा के माध्यम से गाँव के शोषितों का वर्णन किया है तथा उनकी मनोवृत्ति का भी चित्रण किया है। एक शोषित ही दूसरे शोषित की भावनाओं को समझ सकता है, चाहे वह गाँव का हो या शहर का।

2.4.1.13 विड़म्बना :

प्रस्तुत कहानी में बेकारी की समस्या को उद्‌घाटित किया है। कहानी का नायक डाक्टर बनने की इच्छा रखता है। पढ़ाई में भी तेज है, लेकिन घर की आर्थिक, पारिवारिक समस्याओं के कारण इम्तहान में बार-बार बैठने पर भी सफल नहीं होता है। बी.एस.सी. करने पर नौकरी की तलाश करता है फिर भी पैसों का अभाव तथा बड़े लोगों की सिफारिश उसके पास नहीं है इसलिए उसे नौकरी नहीं मिलती। उसे इस बात का हमेशा टेंन्शन रहता है और उसी समय उसका ॲक्सिडेंट होता है, तो उसे बहुत खुशी होती हैं।

एक दिन लेखक उसे देखने चला जाता है तो लेखक को लगता है कि ॲक्सिडेंट के कारण उसके दिमाग पर भारी चोट आयी है, और उसे पागलपन के दौरे पड़ रहें हैं। लेखक के पूछने पर वह बता देता है कि - ''आप ही बताइए अंकल! डाक्टर साहब का कहना है कि मेरी टाँग ठीक हो जायेगी - बस, थोडा-सा नुकस रह जायेगा। यानी लंगडापन रह जायेगा... सो अच्छा भी होगा मैं विकलांग घोषित हो जाऊँगा। सरकारी नौकरियों में विकलांगों के लिए तीन प्रतिशत स्थान सुरक्षित है।''[13]

तात्पर्य - आज के समाज में फैली बेकारी की समस्या पर लेखक ने व्यंग्य कसा है। नौकरी पाने के लिए एक अच्छा-खासा आदमी विकलांग बनने के लिए तैयार है यहाँ बेकारी की विकलांगता को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

2.4.1.14 चार्ज-शीट :

प्रस्तुत कहानी में आधुनिक समाज में महिलाओं को जिन कठिन, क्रूर और क्लेशपूर्ण परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है। उसका विवेचन 'कुसुम' नायिका के द्वारा किया है।

कुसुम एक सुंदर, सुशील लड़की है। पढ़ाई के बाद लिपिक के पद पर नियुक्ति हो जाती हैं। पिता की मृत्यु के बाद घर की जिम्मेदारी को पूरी तरह से निभाती हैं।

ऑफिस में कुसुम को उसका बॉस हमेशा डाटता, फटकारता है। एक दिन कुसुम को चार्ज-शीट मिलती है, तो ऑफिस का फरिश्ता उसे आकर बताने लगता है, ''मिस कुसुम, मैंने बात की थी। लगता है, लोगों ने साहब के खूब कान भर रखे हैं। वे आपसे सख्त नाराज हैं। नाम सुनते ही भड़क उठे - 'वह लड़की! वह बिल्कुल काम नहीं करती। मैं उसे डिसमिस कर दूंगा या ऐसी जगह फेंकूगा जहाँ पानी...।''[14]

एक दिन कुसुम उसी फरिश्ते के साथ बॉस के घर जाती है जो असल में बॉस का चमचा है और बॉस के काले कारणामों का सूत्रधार होता हैं। चार्ज-शीट के नाम पर कुसुम को फँसाकर उसपर बलात्कार किया जाता है - ''और अगले दिन सुबह, शहर से दूर, नहर के किनारे, सारे सभ्य समाज, सम्पूर्ण मानव जाति को चार्ज-शीट सी देती हुई एक लड़की की क्षत-विक्षत नग्न लाश पड़ी थी।''[15]

तात्पर्य - आज भी महिलाओं पर अत्याचार होते हैं। उनकी मजबूरियों का फायदा उठाया जाता हैं। स्वतंत्रता की बात सिर्फ मंच पर कहने योग्य है, आधुनिक युग में स्त्री-पुरूष समानता का नारा लगानेवाले सफेद वेशभूषा के पीछे छुपे सैतानों जैसे काले कारनामों का पर्दाफाश किया है।

2.4.1.15 मनहूस :

प्रस्तुत कहानी 'मनहूस' नामक आदमी की है, जिसका असली

नाम किसी को पता नहीं, समाज का वह उपेक्षित इंसान है।

मनहूस बचपन से अनाथ है, जब उसका जन्म हुआ उसी समय उसके माता-पिता का देहांत हुआ। बुआ ने उसका पालन-पोषण किया उसके बुआ की मृत्यु पश्चात गाँव के सभी लोग मनहूस कहने लगें। गाँव के पंडित रामजीदास ने फतवा दिया, ''लड़के के बारहवें शनि है, जो मित्रों की ओर शत्रु भाव को देख रहा है। जिसकी ओर वह प्यार से देखेगा, उसे विधाता भी नहीं बचा सकते।''[16] अतः सारे गाँववाले मनहूस से नफ़रत करने लगें। जवानी में पत्नी के गुज़र जाने से गाँव के सभी लोगों का मनहूस के मनहूस होने का शक यकिन में बदल गया। तभी से लोग मनहूस की सूरत देखना भी अपशकून मानने लगे।

एक दिन गाँव में नदी के बाढ़ से पानी आने लगा, गाँव के ऊँची इमारत पर गाँव के लोग ठहर जाते हैं। लेकिन कुछ ही घंटों में वह इमारत डूबने का ख़तरा नज़र आता है। मनहूस भी उन्हीं लोगों में एक किनारे पर खड़ा है। नंबरदार के कहने पर वह गाँव के उन्हीं लोगों की जान बचाने के लिए धनकपुर के मंदिर तक बाढ़ से भरी नदी को लांघता हैं जिन्होंने जिंदगीभर उससे नफरत की थी। धनकपुर से गाँववालों को बचाने के लिए नाव का इंतजाम करता है। बाढ़ को पार करते समय काँटे, तथा साँप-बिच्छुओंने उसे इतना काँटा था कि उसका सारा बदन घायल हो चुका था। लेकिन गाँववालों को बचाने की खुशी गहरे जख्मों से कई ज्यादा लगती थी। ''और आधे घंटे के बाद सामान और आदमियों से भरी तीन नावें अथाह जलको चीरती हुई राजापुर गाँव से धनपुर के मंदिर की ओर तेजी से बढ़ी जा रही थीं। यहाँ मृत्युशैया पर लेटा मनहूस बेचैनी से उनके वहाँ सुरक्षित पहुंच जाने की प्रतिक्षा कर रहा था।''[17]

तात्पर्य - समाज में अंधश्रद्धा के कारण इंसान को उपेक्षित, मनहूस तथा अपशकूनी माना जाता है। अगर किसी कारणवश ऐसे मनहूस लोगों को अपनों से प्यार मिलता है, तो उसके लिए अपनी जान तक देना मुनासिब समझते है। ऐसे मनहूस समझनेवाले लोगों की मनोवैज्ञानिकता अंकन लेखक ने सूक्ष्मता से किया है।

2.4.1.16 कंकाल हंसता हैं :

प्रस्तुत कहानी जातिय विद्वेष के भयंकर परिणामों को प्रस्तुत करती हैं। साथ ही समाज में रहनेवाले दुमुँहे लोगों का पर्दा फाश किया है।

कहानी मुख्य पात्र धर्मसिंह राणा की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए आधुनिक तंत्रज्ञान का प्रयोग करता है। जात, धर्म आदि के नाम पर सहानुभूति दिखाकर लोगों के दिल में जगह बना लेता है। बेटों की तरह बेटी को भी पढने-लिखने की मोहलत देता हैं। पूरे गाँव में धर्मसिंह राणा की बेटी संगीता सिर्फ कॉलेज में पढ़ रही है। गाँव के सभी जाति के लोगों को एक ही पंक्ति में भोजन देनेवाले वे अकेले आदमी है। जब संगीता नीच जाति का मित्र बनाती है, फिर भी उसके पिता को कोई ऐतराज नहीं हैं लेकिन... ''इन से शादी करूंगी।'' ठीक यही शब्द तो उसने नहीं कहे थे, पर इशारों ही इशारों में जो कहा था, उसका मतलब यही था।''[18] तभी धर्मसिंह राणा अपने राजनीतिक दाँव-पेच लगाकर जिस तरह 'साँप भी मरे और लाटी भी ना टूटें' अपनी बातों में नौजवान को फँसाकर उसका काँटा रास्ते से हटाते हैं। संगीता कई दिनों तक नौजवान की राह तकती है। आखिर कुछ दिनों के बाद पिता के काले करनामों का संगीता को पता लगता है। इस सदमें से संगीता पागल हो जाती है। और अपने पिता से नफरत करने लगती हैं।

तात्पर्य - 'आधुनिकता' को अपने स्वार्थ के लिए अपनाया जाता है और अपनी प्रसिद्धि का साधन बनाया जाता है। लेकिन जब अपनी बेटा या बेटी किसी गरीब या नीच कुल के साथ अपना रिश्ता जोड़ना चाहते हैं तो उन्हें मंजूर नहीं होता। इस तरह दो मुँहेपन वाले लोगों की प्रवृत्तियों को उद्घाटित किया है।

2.4.1.17 पर कटी तितली :

प्रस्तुत कहानी में विवाह के पश्चात नारी पर होनेवाले पारिवारिक अन्याय, अत्याचार का उद्घाटन किया है।

कहानी की नायिका ज्योति हँसती, खिल-खिलाती यौवन के द्वार पर खड़ी उमंगों भरी लड़की हैं। मॅट्रिक के इम्तहान में छात्रवृत्ति पाकर आगे कॉलेज में लिखाई-पढ़ाई करना चाहती है। लेकिन कॉलेज की शिक्षा शहर में जाकर लेनी

पड़ेगी इसलिए ज्योति के पिता आगे पढ़ने के लिए मना करते है। ज्योति को आगे पढ़ने की उत्कट इच्छा चूप बैठने नहीं देती है। परिणामस्वरूप ज्योति वीरू नामक मुँहबोले भाई के साथ कॉलेज दाखिला करने जाती है और घर आने में देर होती हैं। तो ज्योति के पिता घर में हंगामा खड़ा कर देते है। और उसकी शादी जबरदस्ती उससे दस साल से बड़े लड़के के साथ करते हैं।

ससुराल में ज्योति की जिंदगी नरक बन जाती हैं। उसके ससुराल वाले उस पर अन्याय, अत्याचार करते हैं। एक दिन वीरू उसे मिलने ससुराल जाता है। ज्योति उसे अपनी दर्द भरी जिंदगी का बयान करती हैं, उसे अपने शरीर पर लगे घाव दिखाती है और फिर वीर उसके जख्मों का वर्णन करता हैं,''मेरे शरीर का रोम-रोम सिहर उठा।... सारी पीठ सूजी हुई थी और उस पर जंजीर के नीले निशान, जिन पर खून रिसकर जम गया था, इस तरह उभरे हुए थे जैसे छापे से छापे गये हों। उसकी बाहों और गर्दन पर भी वैसे ही निशान थे और चेहरा थप्पड़ो और मुक्कों की मार से सूज रहा था।''[19]

ज्योति पर ससुराल वालों के अत्याचार बढ़ते गये और जब ज्योति को एक के बाद एक तीनों लड़कियाँ हुई, तो ज्योति के जीने या मरने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता हैं। ज्योति को चौथी लड़की होगी यह डाक्टरों पता लगवा कर ज्योति के मन की चिंता किये बिना उसका गर्भ गिराते हैं। इस घटना से ज्योति बच तो जाती है, लेकिन उसकी दिमागी हालत बिगड़ जाती है। और वह पागल हो जाती है।

तात्पर्य - आज भी परिवार में नारी पर कितनी अन्याय, अत्याचार तथा शोषण हो रहे हैं, उसका वर्णन कहानी में हुआ हैं। गर्भलिंग जाँच, गर्भपात के लिए कितने भी कठोर नियम बनाये हैं, लेकिन अपने-आप को आधुनिक कहलाने वाले समाज के लोगों ने उन्हें ताक पर रखा हैं।

2.4.2एक और सावित्री (कहानी संग्रह) :

प्रस्तुत कहानी संग्रह लेखक का चौथा कथासंकलन हैं, 1999 में अनिल प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है। उसमें सोलह कहानियाँ संकलित है।

2.5.1 एक और सावित्री :

यह कहानी संग्रह की शीर्षक कहानी है, एक श्रमजीवी नारी पात्र की दिनचर्या पर फोकस ड़ालती है जो प्रतीकात्मक ढंग से लिखी गई है।

'नंदा' नामक कहानी की नायिका सुंदर, कोमल तथा स्वाभिमानी स्त्री हैं। उसने आँतरजातिय विवाह किया है और अपने पति को लेकर मां के पास रहती है। शादी के एक साल बाद अचानक नंदा का पति बीमार पड़ता हैं। नंदा अपने पति से बहुत प्यार करती है। इसलिए वह दिन-रात काम में लगी रहती हैं, पति को अस्पताल में भर्ती 'करती है और खुद दवाईयों का खर्चा उठाने के लिए लोगों के घर में चौका बर्तन करने साथ-साथ डॅम पर मजदूरी करती हैं। नंदा अपने पति तथा माँ की पूरी जिम्मेदारी निभाने की कोशिश करती है। मंदा कभी किसी से कुछ मांगती नहीं डॅम पर काम करते समय लोगों से मजदूरी करवानेवाला बाबू नंदा को बहन मानता हैं, नंदा की मदद भी करना चाहता है। लेकिन नंदा उन्हें बताती हैं कि दुकानदार से उधार सामान लिया जिसे वह चाचाजी कहती थी लेकिन बाद में उसे पता चला कि दुकानदार की नीयत में खोट है, तो उसने निर्णय लिया कि ''भविष्य में कभी किसी का एहसान नहीं उठाऊँगी, चाहे कोई भी क्यों न हो। लोग चाहे कुछ भी कहें, कल से डॅम पर मजदूरी करने जाने लगूँगी। इज्जत बेचने से परिश्रम बेचना अच्छा है।''[20]

अत्याधिक परिश्रम करने से नंदा की तबियत बिगड़ जाती है और एक दिन वह काम करते समय बेहोश हो जाती हैं। तुरंत डॉक्टर को बुलाया जाता हैं। डॉक्टर उसे आराम करने की सलाह देते हैं। घर जाने पर पति की चिठ्ठी मिलती है जिसमें लिखा था कि तबियत में सुधार आ रहा है लेकिन पैसों की जरूरत है। नंदा अगले दिन फिर हँसते हुए चेहरे से तरोताजा होकर काम पर जाती है जैसे कि वह कभी बीमार थी ही नहीं।

तात्पर्य - प्रस्तुत कहानी में नंदा की श्रद्धा तथा पतिनिष्ठा एवं अपने परिवार को सँभालने के लिए अमानवीय परिश्रम को दर्शाया गया है। आधुनिक सावित्री ने अपने प्राण दाँव पर लगाये और निर्धनतारूपी यमदूत से अपने को बचाने के लिए

सिध्द हुई हैं।

2.5.2माँ के आँसू :

प्रस्तुत कहानी में बालमनोवैज्ञानिकता चित्रित की गई है, कहानी का केंद्रिय पात्र दीपू है।

दीपू स्कूल में पढ़नेवाला छोटा बच्चा है। उसके पिता का देहांत हुआ है इसलिए उसकी माँ हमेशा रोती-बिलगती हुई नजर आती है। अबोध दीपू को लगता है। घर की जिम्मेदारियाँ अकेले माँ को संभालनी पड़ती हैं और माँ को तकलीफ होने से माँ हमेशा रोती है।

एक दिन स्कूल से लौटकर दीपू देखता है कि माँ को तेज बुखार है। माँ को दवाई लाने जाता है और शर्मा अंकल के पास कोयला तोड़ने-ढोने का काम करता है। उन्हीं पैसों से दवाई लेकर घर आता है। जब घर में देर से आता है, इसलिए माँ उसे डाँटने लगती है। लेकिन दीपू के हाथ में दवाई और कोयले से काले हुए शरीर को देखकर उसके मासूम चेहरे को चूमने लगती है और गले लगाकर रोने लगती है। दीपू फिर परेशान होता है कि माँ अब क्यों रो रही है।

तात्पर्य - इस तरह लेखक ने दीपू के माध्यम से बालमनोवैज्ञानिकता का चित्रण किया है। साथ ही विधवा नारी की दुर्भाग्यावस्था को दर्शाया है।

2.5.3उर्फ भैंसा या...? :

प्रस्तुत कहानी का पात्र 'रामस्वरूप' नामक आदमी हैं जिसे कुरूपता के कारण लोग 'भैंसा' के नाम से चिढ़ाते हैं।

लेखक जब रामस्वरूप को देखता है तो उससे घृणा होती है कि लोग उसकी कुरूपता, शादी, सुहागरात बीवी आदि के बार में चिढ़ाते हैं, खिल्ली उड़ाते हँसते हैं। फिर भी रामस्वरूप सिर्फ हँसकर इन बातों को नजरअंदाज करता हैं। इतना बड़ा और सशक्त होकर भी किसी से कुछ नहीं कहता है।

एक दिन उनके दफ्तर में कुमारी प्रतिभा भारद्वाज आती है, तो उसे अपनी ओर आकृष्ठ करने के लिए दफ्तर के लोग उताविल हैं। रामस्वरूप यह सब

देखकर मुस्कुराने लगता हैं। एक दिन प्रतिभा दफ्तर में बताती हैं कि रास्तें में आते-जाते कुछ गुंडे उसे छेड़ते हैं। लेकिन आज जब कि प्रतिभा मुसीबत में है तो उसे मदद करने के लिए दफ्तर का कोई आदमी तैयार नहीं होता हैं। सब अपने-अपने कारण बताकर दफ्तर छुटने के पहले ही घर चले जाते हैं। उसी समय प्रतिभा के घर छोड़ने के लिए रामस्वरूप तैयार होता हैं। परंतु गुंडों के आने के बाद रामस्वरूप के साथ हाथा-पायी होती है। और रामस्वरूप का गुड़ों के हाथों खून हो जाता है। कहना गलत नहीं होगा कि दुश्मनों से लड़ते हुए वीर ही मारे जाते हैं। अगले दिन दफ्तर में पता चलता है कि रामस्वरूप 'भैंसा' नहीं बल्कि 'शेर' था। सब लोग आश्चर्य करने लगते हैं, जब उसकी शूरता का पता चलता हैं।

तात्पर्य - समाज के उपेक्षित इंसान की जिसे सब लोग 'भैंसा' के नाम से बुलाते थे, उसी रामस्वरूप को मरणोपरान्त वहीं लोग 'शेर' की उपाधि देते हैं। यहाँ पर समाज स्थित लोगों की मनोवैज्ञानिकता का चित्रण किया है।

2.5.4 बाबा बरगद :

प्रस्तुत कहानी 'प्रतीकात्मक' हैं। प्रमुख पात्र बाबा बलवंत हैं, जो बरगद के पेड़ का प्रतीक है।

बाबा बलवंत गाँव में सब लोगों की मदद करता हैं। जब से उसने फौज से सोवानिवृत्ति लेकर गाँव में आता है। गाँव के शोषक लोग भय से चितिंत है। जहाँ कहीं भी लोगों पर अन्याय, अत्याचार होता है, वहाँ सबसे पहले बाबा बलवंत पहुँचता है। एक दिन गाँव का एक भी आदमी नाईयों के लिए गवाह बनने को तैयार नहीं था। लेकिन बाबा बलवंत के कहने पर उनके दोस्तों ने भी सच्चाई का साथ दिया और खुद गवाह बनकर नाईयों को इन्साफ दिलाया।

दूसरों के लिए मर मिटनेवाला बाबा बलवंत की अपनी जिंदगी में काँटे-ही-काँटे थे। पत्नी की बीमारी, जवान बेटे की मौत, जमीन-जायदाद कर्जे में नीलाम होना, सिर से पैर तक बढ़े हुए कर्जे की चिंता आदि से तंग आकर उसे शराब की आदत पड़ जाती हैं। हमेशा किसी न किसी घटना से बड़े लोगों से झगड़ा मोल लेना, किसी पर भी होनेवाले अन्याय, अत्याचार को बाबा बरगद सह नहीं

पाता है और हमेशा अपनी जिंदगी खतरे में डालना उनकी आदत बन जाती है। जब उनके उन्हें समझाने लगते तो, वह एक ही जवाब देते हैं - ''दोस्त आप शायद भूल रहे हैं कि मैं बाबा हूँ, जगत बाबा। यह जमीन-जायदाद तो दोस्त, यहाँ ही रहेगी। मेरी नहीं होगी किसी दूसरे की होगी। पर लोगों की तकलीफें मुझसे देखी नहीं जाती।... रही दुश्मन बनाने की बात, तो दूसरे विश्व युद्ध में कितनी महमों में हिस्सा ले चुका हूँ। जान तो एक दिन ही है, फिर किसी बात के लिए क्यों न जाए।''[21]

तात्पर्य - लोगों के साथ प्रेम से रहनेवाला, मदद करनेवाला, बुराईयों का डट कर सामना करनेवाला बाबा बरगद अंदर से टूटने के बाद भी लोगों से निस्स्वार्थ काम आता है, अपना कर्तव्य मानता है, जैसे कि बरगद का पेड़।

2.5.5नये युग की यक्षिणी :

प्रस्तुत कहानी में आधुनिक स्त्री की आकांक्षाओं का चित्रण हैं। आधुनिक युग के लड़का-लड़की अपने आपको यक्ष और यक्षिणी समझते है। उनके घर आमने-सामने हैं। लड़का सामनेवाली सुंदर लड़की की ओर आकृष्ट होता है। लेकिन लड़का उलझन में पड़ जाता है कि यह सहन में बैठी सुंदरी चिंतित चेहरे से रोज किसका इंतजार करती है, किस की राह तकती है। अपने इस उलझन को सुलझाने के लिए ड़रते हुए सहन में बैठी यक्षिणी की ओर पत्र का गोला बनाकर फेंकता है। श्याम को यक्षिणी पत्र का गोला बनाकर यक्ष के पत्र का जवाब भेजती है कि ''हमारे घर में सभी लोगों को जिसका इंतजार है, उसी की प्रतिक्षा मैं दिन भर सहन में बैठकर करती हूँ, वह है मेरा 'अपॉइन्टमेन्ट लेटर' कर सकोगे कुछ सहाय्यता?''[22]

तात्पर्य - वर्तमान युग में स्त्री जाति को सजग किया गया है, वह आज सिर्फ किसी की प्रेमिका, पत्नी, बेटी बनकर रहना नहीं चाहती है। आज आत्म-निर्भर, अर्थ-निर्भर तथा स्वावलंबी बनना चाहती है। सजग की आकांक्षा को यक्षिणी के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

2.5.6 उदास पीला गुलाब :

प्रस्तुत कहानी दहेज के नाम पर फँसाई गई युवती का अंकन करती है।

प्रमुख पात्र प्रेम मल्लिक है, वह एम.ए.,बी.एड्. है फिर भी उसके शादी के सिलसिले में उसके पिताजी चिंतित है। एक दिन उन्हें मनचाहा दामाद मिलता है। जितेन्द्र जैसा दामाद पाकर प्रेम के पिता इतने खुश होते हैं कि शादी में बहुत खर्चा करते हैं। शादी के दस दिनों के बाद जितेंद्र बिजनेस के सिलसिले में कहीं चला जाता है, फिर वापस नहीं आता, उसकी कोई ख़बर भी नहीं आती। प्रेम मल्लिक और उसके पिताजी जितेंद्र को ढुँढने लगते हैं। कहीं भी पता नहीं मिलता है, आखिर थक कर पुलिस स्टेशन जाते हैं। वहाँ उन्हें पता लगता है जितेंद्र एक बहुत बड़ा फ्रॉड आदमी है, पैसों के लिए अमीर घर की लड़कियों से शादी करके पैसों के लिए दहेज उगाने का काम करता है, आज तक नाम बदलकर सत्रह शादियाँ की है, पुलिस को भी उसकी तलाश है। इस घटना से प्रेम के सपने काँच की तरह टूटकर बिख़र जाते है। उसका चेहरा पीले गुलाब की तरह उदास बन जाता है।

तात्पर्य - जितेंद्र जैसे लोग समाज के लिए कलंक हैं। पैसों के लिए लोगों के दिल में जगह बनाकर उन्हीं को लूटने का काम करते है। कहानी में प्रेम मल्लिका का चित्रण संवेदनशील तथा मार्मिकता से किया है।

2.5.7 बुचड़खाना :

प्रस्तुत कहानी में बुढ़ापे की समस्या को उद्घाटित किया है। लेखक अपनी दादी माँ की सेवा करता है। उसीका चित्रण मार्मिकता से किया है।

लेखक की दादी माँ छब्बीस साल की उम्र में विधवा हुई थी। उसी समय से उसने बच्चों तथा ससुरजी को संभाला था, घर की जिम्मेदारियों को निभाया, बच्चों की शादी की लेकिन आज जब अपने बुढ़ापे के कारणवश किसी को अपने पास बुलाती है, कोई काम बताती है, तो घर के लोग उनसे दूर भागते हैं। बल्कि बहुएँ कभी-कभी घर के दुकान में से पैसे लेने का इल्जाम भी लगाती है।

दादी बुढापे के कारण तथा घर के लोगों के बर्ताव तंग आ गई हैं। लेखक को अपने साथ शहर ले जाने की बात करती है, नहीं तो बुचड़खाने भेज देने की बात करती है। वह अपने पोते से पूछती है कि ''बच्चा एक बात तो बताओं।... आदमियों का बूचड़खाना नहीं होता क्या?'' ''मेरा मतलब है कि कोई ऐसा बूचड़खाना नहीं होता जहाँ बूढ़े निकम्मे लोगों का.... जैसे बूढ़े पशुओं को आगे कहने की उसे हिम्मत नहीं हो रही थी।''[23]

तात्पर्य - कहानी में लेखक ने बूढ़े लोगों की असमर्थता, दयनीयता तथा अकेलापन का यथार्थ चित्रण किया है। साथ ही बूढ़ों की मनोवैज्ञानिकता को चित्रित किया है।

2.5.8 बला :

व्यसनधीनता घर को किस तरह विनाश के राह पर लाकर छोड़ देती है, उसका लेखक ने यथार्थवादी अंकन कहानी में किया है।

शराब के कारण भरा-पूरा घर दाँव पर लग जाता है। गाँव की एक बूढ़ी और अपनी पोती को लेकर बैधजी के पास आती है। और अपने घर की खस्ता हालत बयान करती है। घर के तीन मर्द कमाते थे और घर में खुशहाली आने पर तीनों भाई शराब के नशे में धूत होकर कहीं भी गिरने लगते हैं। अचानक एक-एक करके तीनों की मौत हो जाती हैं, इसी सदमें से पोती को दौरे पड़ने शुरू होते हैं, घर तीन विधवाओं का दुःख सहा नहीं जाता है। वह कहती हैं - ''हमारे घर में तो बेटा, कोई बला घुसी है।''[24]

तात्पर्य - शराब एक ऐसी बला है जिसके कारण मनुष्य का जीवन मिट्टी में मिल जाता है। शराब के कारण कितने ही घर उद्धवस्त होते है उसके साथ ही परिवार की दुर्दशा भी होती है।

2.5.9 जिप्सी की तलाश :

प्रस्तुत कहानी में तब उच्च मध्य वर्गीय परिवारों में बूढ़े-बड़े लोगों की दुरावस्था का उद्घाटन किया है।

कहानी की प्रमुख पात्र डोली चोपड़ा समाचार पत्र के दफ्तर में काम करती है साथ ही फैशन के तौर पर समाज सेवा भी करती है। उसके पति ललित चोपड़ा बड़े नेता हैं। लेकिन पत्नी के आगे उनकी एक नहीं चलती। संघ की कोटी में उनका परिवार रहता हैं।

एक दिन जिप्सी नाम का कुत्ता खो जाता हैं, तो पूरे दफ्तर और नौकरों को हर जगह ढुँढने के लिए भेजा जाता हैं। पुलिस स्टेशन फोन करके पुलिस फौज को भी इस काम पर लगाया जाता है। आखिर में रात के नौ बज़े जिप्सि मिल जाता हैं। तो खुद एस.एच.ओ.साहब जिप्सी को लेकर हाजिर होते हैं।

जिप्सी मिलने के बाद रात का खाना खाने बैठते है इतने में ललित चौपड़ा को अपने पिता की याद आद आती हैं। अपनी पत्नी से पिता के बारे में पूछते हैं तभी डोली चोपड़ा कुछ भूलने की भाव से अभिव्यक्त करती हैं कि ''ओह... माई गॉड। ''मैं तो जिप्सी के चक्कर में भूल ही गयी। पिताजी तो सुबह नौ बजे ही निकल गये थे .... जरा नाश्ता देने में देर हो गयी थी।... क्या करूं, आज कल जरा-जरा सी बात पर बच्चों की तरह रूठ जाते हैं। लेकिन मूसीबत तो मेरी है। अब इस समय कहाँ ढूँढती फिरू उन्हें... पर आप ख़ाना खाइए। उनका रोज़ का ही काम है। बच्चे तो है नहीं कि गुम हो जायेंगे बैठे होगें किसी पार्क में इस उड़ीक में कि कोई उन्हें मनाने आए। या चले गये होंगें अपने लाड़ले बेटे के पास। पहले भी जो चले गये थे। ... थोड़ी देर तक और न आए तो देखती हूँ।''[25]

तात्पर्य - उच्च परिवार में बूढ़े लोगों का स्थान, उनके प्रति दिखाई गयी उपेक्षा, अपमान इसका संवेदनशीलता के साथ अंकन किया है।

पालतु कुत्ते के खोने से घर के लोग चिंतित होते हैं लेकिन घर के पिता सुबह से गायब हैं, तो कोई ख़बर नहीं लेता है, न चिंता करता है। यहाँ पर जानवर की गैरत की जाती है, परंतु जीते-जागते इंसान की नहीं की जाती है।

2.5.10 खलनायक :

प्रस्तुत कहानी में खून के रिश्तों की अपेक्षा पराये लोगों के साथ दिल से जुड़े हुए रिश्तों की गहराई को अंकित किया है।

नीलू और निर्मल एक ही ऑफिस में नियुक्त हैं। इसलिए दोनों में घनिष्टता बढ़ती हैं। दोनों में सगे भाई-बहन जैसा रिश्ता बनता हैं। नीलू की माँ का देहांत हुआ है, दो भाई है लेकिन वह अपने काम में व्यस्त रहते हैं। अतः नीलू का जीवन प्रेम से वंचित हैं।

ऑफिस में नीलू एक उँचे पद पर नियुक्त होती है फिर भी निर्मल और उसका मिलना-जुलना कम नहीं होता हैं। निर्मल नीलू की शादी की चिंता करता है, आखिर में उसके बड़े भाई से मिलकर अच्छासा रिश्ता देखकर शादी करवाते हैं। लेकिन नीलू का पति नीलू और निर्मल के रिश्ते पर संदेह करता है। नीलू यह बात सह नहीं पाती और निर्मल के साथ अपना रिश्ता खत्म करने के लिए निर्मल को खत लिखती हैं ''जिंदगी में ऐसे अवसर भी आते हैं, जब रिश्ते निभाने मुश्किल हो जाते हैं आप से प्रार्थना हैं कि आप अतीत को मुर्दा समझकर कब्र में दफना दीजिए और मुझे भूल जाइए और शांति से रहने दीजिए।''[26] पत्र के मिलने पर भी निर्मल नीलू से मिलना चाहता है, परंतु नीलू मिलने से इन्कार करती है।

कई दिनों के बाद नीलू के पति का गुर्दा नाकाम हो जाता है। समाचार पत्र से गुर्दे की मांग की जाती है। निर्मल को यह समाचार पढकर पहले तो अच्छा लगता है लेकिन नीलू के विधवा होने का दुःख वह कैसे सह पाता इस तरह परिवर्तित विचारों के साथ अस्पताल जाकर अपना गुर्दा नीलू के पति को देकर भाई के रिश्ते को निभाता है।

तात्पर्य - वर्तमान युग में खून के रिश्तों में दूरियाँ पैदा हो गई है। परंतु मुँहबोले, जोड़े गए रिश्ते खून के रिश्तों से बढ़कर अपना रिश्ता निभाते है। यह सत्य निर्मल और नीलू के माध्यम से लेखक ने उद्घाटित किया है।

2.5.11 चन्द्रकिरण :

प्रस्तुत कहानी वर्तमान युग के युवकों की आँखे खोलनेवाली हैं। इसमें आदर्शवाद यथार्थ को साथ लेकर चलता है।

कहानी की नायिका चंद्र अनपढ़ और गंवार है, इसलिए उसका पति नरेंद्र उसे ठुकारता है। चंद्र उससे मिलने के लिए तरसती है और उसके सपने काँच

की तरह टूट जाते हैं। नरेंद्र किसी को बताये बिना गाँव छोड़कर शहर चला जाता है। चंद्र अपने पति को अपने पास बुलाने के लिए ख़त लिखती हैं। नरेंद्र उसे मर जाने की सलाह देता हैं। चंद्र की घोर निराशा होती है, मायके में भी उसे सहारा नहीं मिलता, नरेंद्र को दूसरी शादी की मोहलत देकर खुद उसके जीवन से चली जाती है।

नरेंद्र की दूसरी शादी के बाद घर में रोज़ महाभारत मची रहती है। फैशनेबल पत्नी का खर्चा वह सह नहीं पाता। रोज़मर्रा की जिंदगी से तंग आकर नरेंद्र गाँव लौटने लगता है। उसी समय उसे बस का ऑक्सिडेंट होता है। घायलों को अस्पताल में भर्ती किया जाता है। दो दिनों के बाद जब नरेंद्र को होश आता है। अस्पताल में फिर नर्स चंद्र से उसकी मुलाकात होती हैं। चंद्र अपना खून देकर दिनरात सेवा करके नरेंद्र की जान बचाती है। नरेंद्र पश्चाताप की खाई में जल जाता है। आज चंद्र इस अस्पताल में एक नामी नर्स है। जिसका हृदय सहनशीलता, दया, प्रेम, करूणा, क्षमा का सागर हैं। जिसे नरेंद्र ने पत्थर समझकर फेंक दिया था, वही चंद्र आज अपने सद्‌गुणों के प्रकाश से चमक उठी हैं। नरेंद्र के बाजूवाले चारपाई पर लेटा हुआ आदमी नरेंद्र को बताता हैं कि ''और जी जुलम साई का, ऐसी देवी लड़की को पति ने छोड़ रखा है भाईयों ने भी घर से निकाल दिया। पर वाह री चन्द्र! हिम्मत नहीं हारी। अस्पताल में माई का काम कर लिया। प्राइवेट तौर पर पढ़ कर मॅट्रिक किया, फिर नर्सिंग की ट्रेनिंग की। आजकल सबसे बड़ी नर्स है वह अस्पताल में।''[27]

तात्पर्य - पति द्‌वारा उपेक्षित परित्यक्ता का जीवन व्यतीत करनेवाली चंद्र ने अपना जीवन सेवाधर्म से सार्थक बनाया है।

2.6 धारा बहती रही (कहानी संग्रह) :

प्रस्तुत कहानी संग्रह 1977 में 'पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस' से प्रकाशित हुआ है। कहानी-संग्रह की भूमिका 'भीष्म सहानी' ने लिखी है। इसमें 'पच्चीस' कहानियाँ संकलित है। प्रातिनिधिक रूप में कुछ कहानियों के कथ्य की विवेचना की है।

2.6.1 धारा बहती रही :

प्रस्तुत कहानी में युवा पीढ़ी की दुर्बल मनोवृत्ति को स्पष्ट किया है। वर्तमान युग में युवक अपनी समस्याओं से तंग आकर समस्या को सुलझाने के बारे में सोचते नहीं बल्कि आत्महत्या करने के लिए प्रवृत्त होते हैं। लेकिन जब दूसरा कोई आत्महत्या करने लगता है। तो उसे जीवन की सुंदरता का एहसास दिलाता हैं और आत्महत्या के विचारों से परावृत्त किया जाता है।

कहानी के दो पात्र युवक और युवती आत्महत्या करने नदी के किनारे आते है। युवक की प्रेमिका शालू ने दूसरे लड़के से शादी की है और अपनी प्रेमिका को भूलना युवक के बस की बात नहीं इसलिए वह आत्महत्या करना चाहता है। युवती गर्भवती है वह अपने प्रेमी से शादी करनेवाली थी लेकिन उसी समय उसके प्रेमी की मौत ॲक्सिडेंट में हो जाती है इसलिए वह आत्महत्या करने आयी है।

युवक और युवती एक-दूसरे को आत्महत्या करने से परावृत्त करते हैं। युवती युवक को समझाने के उद्देश्य से कहती है, ''जिस तरह आप चाहते है कि मैं जिन्दा रहूँ, उसी तरह मेरी भी जबर्दस्त इच्छा है कि आप जिंदा रहें, क्योंकि जीवन से बढ़कर इस दूनियाँ में और कोई चीज नहीं है।''[28]

आखिर युवक और युवती एक-दूसरे की जिम्मेदारी निभाने के लिए तैयार होते है।

तात्पर्य - कहानी में लेखक युवक-युवती के माध्यम से यह दर्शाया है कि किसी के चले जाने से जिंदगी कभी खत्म नहीं होती बल्कि किसी का साथ पाकर और भी निखर जाती हैं। साथ ही वर्तमान युग के युवा वर्ग की निर्बल, दुर्बल मनोवृत्ति का उद्घाटन किया है।

2.6.2 जीत-हार :

प्रस्तुत कहानी में दो व्यक्तियों के संघर्ष को चित्रित किया है। जैलदार हकिमसिंह और चौधरी रत्नसिंह में सांप-नेवले की दुश्मनी हैं। दोनों गाँव

के जाने-माने व्यक्ति हैं। दोनों के दुश्मनी का परिणाम गाँववालों को भुगतने पड़ते हैं। गाँव में कोई भी घटना घटित होनेवाली होती है, तो हकिमसिंह और चौधरी एक दूसरे को नीचा दिखाने का मौका ढुँढने लगते हैं। उनकी दुश्मनी की शुरुवात शीशम के वृक्ष को लेकर हो गई थी। दोनों के खेत साथ-साथ होने के कारण शीशम का वृक्ष मोड़ पर था। दोनों भी अपना हक वृक्ष पर जमाते थे। एक दिन वृक्ष तोड़ने के कारण दोनों में झगड़ा हुआ। परिणामतः थाना-कचहरी, पटवारी, आदि के बाद आखिर में जीत चौधरी की हो गई। जौलदार खून का घूँट पीकर रह जाता है, एक दिन गाँव के जातीय झगड़े में चौधरी के बड़े बेटे को फँसाकर जेल भिजवाता है। इस घटना से चौधरी के घर मातम छाया रहता है। चौधरी के मन पर गहरा असर पड़ जाता है।

कुछ दिनों के बाद जैलदार का बेटा रमेश स्कूल से आते समय नदी के बाढ़ में फँस जाता है। उसी समय चौधरी नदी के उफनते हुए पानी में कुद कर जैलदार के बेटे को बचाता है। ''रमेश को कन्धे पर बैठाये एक आदमी खड़ा था - मुस्कराता हुआ! जैलदार की नज़रे झुक गयी। दुश्मन ने आज उन्हें हरा दिया था। चौधरी रत्नसिंह के कंधे पर बैठा रमेश भी मुस्करा रहा था।''[29] इस तरह जैलदार जीतकर भी हारता हैं और चौधरी हारकर भी जीत जाता है।

तात्पर्य - लेखक ने कहानी में मानवतावाद दिखाया है। मनुष्य स्वानुभवों के कारण सामनेवाले के दुःख, दर्द को जानता है और दया,क्षमा, करूणा के पात्र बनता है, यही चौधरी के माध्यम से उद्‌घाटित किया है।

2.6.3 अतीत :

प्रस्तुत कहानी भारत-पाक विभाजन के समय घटित घटनाओं का चित्रण करती है।

कहानी में हिंदु-मुस्लिम परिवार का आपसी प्रेम, अपनापन, सूख-दुःख को साथ बाँटने की मनोवृत्ति को दर्शाया है, तो दूसरी तरफ धर्म के नाम पर हुए दंगों, झगड़ों, अपहरण, बलात्कार का उद्‌घाटन किया है।

नूरा और वीर दोनों बचपन से साथ खेलते हुए बड़े होते है। दोनों के

परिवार वाले एक-दूसरे से बहुत प्यार करते, ईद, रोजा, दीपावली आदि त्यौहार एक साथ मनाते हैं। नूरा हमेशा वीर के रहती पढ़ाई की बातें करती एक दिन नूरा वीर से कहती है ''वीर जी बी.ए. में फस्ट आयेंगे, तो मैं पीर जी के थान पर शीरनी चढ़ाऊंगी।''[29] इस तरह दोनों की दोस्ती उम्र के साथ बढ़ती जाती है। लेकिन देश का बटवारा होने के बाद जब मुस्लिमों को पाकिस्तान भेजा जाने लगा और धर्म के नाम दंगे भड़कने लगे। उसी समय सभी मुस्लिम परिवार पाकिस्तान जाने लगा और नूरा का परिवार भी जाने के लिए तैयार होने लगा। नूरा की आँखें रो-रो कर सूझी हुई है वीर उन्हें टोकने की बहुत कोशिश करता है। लेकिन नूरा के अब्बा वीर से कहते है - नूरा के लायक यहाँ अपनी मजहब का कोई लड़का नहीं है। इसलिए हमें पाकिस्तान जाना जरूरी है। उसी समय वीर नूरा से निकाह करना चाहता है लेकिन पहले से ही इतनी मुसीबतें उन्हें और मुसीबतों में ड़ालना अच्छा नहीं समझता है।

कई दिनों के बाद नूरा के अब्बाजी का ख़त आता हैं कि नूरा पाकिस्तान नहीं पहुँची, रास्ते में ही उसका अपहरण किया गया है और उसका कोई पता नहीं है। वीर को बहुत गहरा सदमा पहुँचता है, बिदाई के समय नूरा से की हुई बातें उसे याद आती हैं ''निकाह की ख़बर जरूर भेजना जैसे भी होगा, मैं अवश्य पहुंचूगा।... वीर जी अपने नतीजे की ख़बर भेजना। पीरजी के थान पर शीरनी चढ़ायेगा पीरजी के थान पर शीरनी?''[30]

तात्पर्य - सांप्रदायिक कुकृत्यों के कारण पारिवारिक जीवन ही नहीं सामाजिक जीवन भी किस तरह विघटित, त्रस्त, भयपूर्ण होता है, इसका चित्रण लेखक ने संवेदनशीलता के साथ किया हैं ।

2.6.4 असली हकदार :

प्रस्तुत कहानी में अकाल पीड़ितों के प्रति मानवीय संवेदनाओं को अंकन गया किया है।

कहानी में तीन पात्र है सुरेंद्र उसकी पत्नी गुड्डी उनका बच्चा पप्पू। सुरेंद्र के छोटे से वेतन में उनका परिवार सुखी हैं महिने के अंतिम दिनों में अधिक कठिनाईयों को झेलना पड़ता है। एक दिन सुरेंद्र ओवर टाईम के रूपये लेकर घर

आता है और पत्नी के हाथ में देते हुए कहता है - ''ये रूपये तुम्हारे है। तुम जैसे चाहो, इन्हें खर्च कर सकती हो।''[31] गुड्डी उसी समय तय करती हैं कि पति के लिए पॅन्ट पीस खरीदना चाहती है। और सुरेंद्र चाहता है कि गुड्डी अपने लिए साड़ी खरीदें। लेकिन उसी समय गुड्डी समाचार पत्र में पढ़ती हैं कि बिहार में सूखा पड़ने के कारण बूढे, बच्चे, जवान लोगों की मृत्यु हो रही हैं। उन्हें मदद की आवश्यकता हैं और भारतीय लोगों से मदद का अवाहान किया है। गुड्डी का दिल इस घटना से काँप उठा और एक इन्सान होने के नाते उन अकाल पीड़ितों के लिए रूपयों की मनिऑर्डर करती है।

तात्पर्य - कहानी में यथार्थ एवं आदर्श मानवतावाद प्रकट हुआ हैं, अभावों में जीनेवाले लोगों में मानवतावादी संवेदनाएँ पाई जाती है, उसका उदाहरण गुड्डी का चरित्र हैं।

2.6.5ट्राई साईकिल :

प्रस्तुत कहानी मध्यवर्गीय परिवार की मर्मान्तक ट्रेजेडी को उभारती है।

मध्यवर्गीय मनुष्य अपने बच्चों की छोटी-छोटी इच्छाएँ भी पूरी नहीं कर सकता है। देवराज डाकखाने में पैकर है। उसके छोटे बेटे पप्पू को स्कूल जाने के लिए साईकिल चाहिए वह जिद्द करता है कि साईकिल चाहिए। देवराज पप्पू से साईकिल देने का वादा करता है। लेकिन उसके वेतन में महिने का खर्चा जैसे-तैसे पूरा होता है और साइकल कहाँ से लाता? लेकिन यह बातें पप्पू के समझ के बाहर हैं। एक दिन देवराज के जिद्द के सामने हार जाता है और सब गुस्सा पप्पू पर उतारता है। परिणामतः पप्पू बीमार पड़ता है। उसे अस्पताल में लाया जाता है लेकिन वहाँ उन्हें कोई पूछता नहीं। देवराज की पत्नी घबराई हुई आवाज में कहती है - ''हालत इतनी खराब है, लेकिन यहां कोई पूछता ही नहीं। बीस बार कहने पर डाक्टर आया और बस यह परची लिखकर दे गया।''[32] देवराज अपने बेटे को बचाने के लिए अपनी नई साईकल बेचकर पप्पू के लिए छोटी साईकल खरीदकर अस्पताल आता है उसी समय उसे पता चलता है कि पप्पू ने आधे घंटे पहले ही दम

तोड़ दिया है।

तात्पर्य - आर्थिक समस्या के कारण मध्यवर्गीय पिता अपने बच्चों की छोटी-छोटी आकाक्षाएँ पूरी नहीं कर सकता है। अतः जिसके पास पैसा है उसी की जिंदगी का मोल है।

2.6.6 अगले अप्रैल में :

प्रस्तुत कहानी में सपनों के महल बार-बार टूटते नजर आते है। कहानी का नायक योगेंद्रनाथ स्कूल में अव्वल आनेवाला लड़का है, एक दिन उनके स्कूल में शिक्षामंत्री आते हैं और उसे आगे पढ़ने का हौसला देकर, समय आने पर मदद करने का आश्वासन भी देते है। मैट्रिक के बाद आगे की पढ़ाई पूरी करना चाहता है, लेकिन आर्थिक तथा पारिवारिक स्थिति बिगड़ जाने पर उसकी यह इच्छा अधूरी रह जाती है। योगेन्द्रनाथ स्कूल में क्लर्क की नौकरी करते-करते पढ़ाई जारी रखता है। फाईनल इअर में किताबें तथा फॉर्म भरने के लिए पैसें नहीं मिलते है। उसी समय पिताजी की मौत होती है। भाई, बहनों की जिम्मेदारी आदि कठिनाईयों में जकड़ा रहता है। चार-पाँच साल ऐसे ही गुजर जाते है। योगेन्द्रनाथ हर साल इम्तहान में बैठने के लिए तैयारी करता है लेकिन इम्तहान का फॉर्म नहीं भर पाता क्योंकि आर्थिक विवशता हर साल सामने आती है। वह कहता है ''बस, जी, अगले अप्रैल में प्रभाकर की परीक्षा अवश्य दे दूंगा। उससे अगले अप्रैल में एफ.ए.औनली इंग्लिश, फिर बी.ए. औनली इंग्लिश, फिर एक सब्जेक्ट और जी, फिर.... ''[33] इस तरह वह सिर्फ सपनों को बुनता रहता हैं।

तात्पर्य - वर्तमान परिवेश में आज का युवक आर्थिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों के विसंगतियों के कारण अपना मानसिक संतुलन खो रहा हैं।

2.6.7 कितनी रात और... :

प्रस्तुत कहानी में सांप्रदायिक झगड़ों के परिणामों को दर्शाया है। सांप्रदायिक झगड़े में किस प्रकार बेकसुर लोगों की हत्या होती हैं इसका निर्ममता से चित्रण किया है। पहला 'अब्दुल हमीद', जिसका खानदान भारतीय फौज में है और उसे भी फौज में भर्ती होना अच्छा लगता था, लेकीन उसकी हत्या होती है।

15197

दूसरा जी.एम.पटेल कक्षा में हमेशा अव्वल आनेवाला लड़का, जो गौतम बुद्ध का उपासक तथा उन्हीं के तत्वों के अनुसार चलने वाला था, सांप्रदायिक दंगा फसाद में वह एक बच्ची की जान बचा रहा था तो धर्मरक्षक कहलानेवाले किसी व्यक्ति ने उसके पेट में छुरा घोंप दिया। उसका पूरा नाम 'अल्लाह, प्रसाद, मसीहा' था, जिसके नाम में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई तीनों धर्मों के नाम आते हैं। सांप्रदायिकता के जहरीले नाग ने ड़स लिया है।

तात्पर्य - सांप्रदायिक समस्या रूपी नाग जिन मासूमों को ड़सा है और न जाने कितने मासूमों को ड़सनेवाला हैं। अतः लेखक ने दिया हुआ कहानी का शीर्षक 'कितनी रात और ...' समर्पक है।

2.6.8 दीवारें बोलती हैं :

प्रस्तुत कहानी गरीबी की दयनीयता को चित्रित करती है। इस कहानी में नायक 'मंगू' अपना गांव छोड़कर शहर में किराये के एक छोटे से मकान में अपनी गृहस्थी बसाता है। मंगू के परिवार में उसकी पत्नी और चार बच्चें है। 'मंगू' हमेशा अमीर बनने तथा अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के ख्वाब देखता हैं। गाँव की जमीन जायदाद चली जाती हैं, शहर में वह हलवाई की दुकान में साठ रूपये महिने के वेतन पर काम करता है। छह लोगों का परिवार चलाना मुश्किल हो जाता हैं। आर्थिक कठिनाइयाँ और जिंदगी की मुसीबतों के कारण मंगू का स्वभाव बेहद क्रोधित, चिड़चिड़ा, झगड़ालू हो गया था। वह बात-बात पे मार-पीट शुरू करना, गालियाँ देता है परिणामतः घर में अशांति निर्माण होती है। ऐसे में बीवी की बीमारी से वह तंग आता है। एक दिन सभी समस्याओं का अंत करना चाहता है और अपने परिवार की हत्या करके आत्महत्या करता है।

तात्पर्य - कहानी में निम्न वर्गीय लोगों की आर्थिक दयनीयता का चित्रण किया है, साथ ही आजकल होनेवाली आत्महत्या के कारणों पर प्रकाश डाला है।

2.6.9 जीवन दीप जलता रहे :

प्रस्तुत कहानी में माँ की ममता का चित्रण किया है। साथ में अंधश्रद्धा को दर्शाया है।

कहानी की पात्र भागवती जो वीतरागी पागल है और इसी पागलपन में पच्चीस साल से तालाब में दिया जलाती आयी है। भागवती ने सबसे पहले पति और फिर जवान बेटे बीरू को खो दिया। बेटे की मौत का सदमा वह बरदाश्त नहीं कर सकी। बीरू जब फौज में भर्ती हुआ तो बीरू के शादी सपने भागवती संजोने लगी, उसके लिए लड़कियाँ देखने लगीं। लेकिन एक दिन लढ़ाई में बीरू के खोने की ख़बर मिलती हैं। उसी दिन नामी ज्योतिषी के पास वह जाती हैं। ज्योतिषी उसे बताता है कि ''बीरू शत्रु की कैद में है। उसे कोई नुकसान नहीं पहुँच सकता। ग्रहों को शांत करने के लिए उसे तालाब के किनारे दीया जलाना चाहिए।''[34] उस दिन से भागवती तालाब के किनारे दीया जलाया करती है। कुछ दिनों बाद बीरू को वीरगति प्राप्त होने का तार आता है। यह ख़बर सुनकर भागवती पागल हो जाती है। और हमेशा तालाब के किनारे बेटे के आने के इंतजार में दीया जलाती हैं।

तात्पर्य - कहानी में ममता एवं वात्सल्य की चरमसीमा चित्रित है। साथ ही अंधविश्वास का संकेत दिया है कि ज्योतिषी की वाणी पर कितना विश्वास रखना चाहिए। क्योंकि संवेदनशील तथा भावुक व्यक्ति के मन पर ऐसी घटनाओं का गहरा असर पड़ता है। उदाहरण पर भागवती बेटे के गम में पागल होती है लेकिन उसके आने के इंतजार में हमेशा तालाब के किनारे दीप जलाती है।

2.6.10 समय के चरण :

प्रस्तुत कहानी में नारी चेतना एवं स्वअस्तित्व की खोज के लिए निकली नारी की मानसिकता का चित्रण किया है।

कहानी की नायिका 'कम्मो' एक सीधी-साधी लड़की है, पढ़ी-लिखी न होने के कारण बाहरी दुनियाँ का ज्ञान उसे नहीं है। एक दिन उसके घर के सामने हम्बीरपुर सुधार सभा की बैठक होती है, जिसमें उसके पिताजी भी शामील होते है। सभा में रमेश नामक लड़के का स्त्री बिमर्श, स्त्री स्वातंत्र्य आदि पर दिया गया भाषण सुनकर कम्मो में पढ़ने-लिखने की जिज्ञासा निर्माण होती हैं। रमेश एक दिन किसी काम से कम्मो के घर आता है। कम्मो से बातें करते समय उसे बताता हैं कि ''हमने बहुत सी समस्याओं पर विचार किया लेकिन एक समस्या है, जिस पर

हम में से किसी का भी ध्यान नहीं गया हैं। वह समस्या है, हमारे इलाके में लड़कियों का खरीदा जाना और उनका बेचा जाना। बड़े दुःख की बात है कि अब भी जब कि हमारा देश आजाद है और यहाँ संविधान की ओर से औरत मर्द सब को एक से अधिकार प्राप्त हैं, हमारे इलाके में लड़कियों को भेड़-बकरियों की तरह खरीदा-बेचा जाता है।''[35]

कम्मों पढ़ने-लिख़ने लगती है, कई बातें उसे समझ में आने लगती है। उसी समय उसके पिताजी एक अधेड़ उम्र के आदमी से कम्मों की शादी तय करते हैं। कम्मों को लगता है, यह शादी नहीं, बल्कि शादी के नाम पर दो हजार रूपयों में उसे बेचा जा रहा है। जैसे एक दिन भेड़ की बछड़ी 'सुंदरी' को बेचा गया था। उसी रात कम्मों अपने भविष्य की खोज में, स्वतंत्रता की खोज में घर से भाग जाती है। अपने पिताजी को खत लिखती है कि, ''मैं जा रही हूँ क्यों कि मैं भेड़-बकरी नहीं हूँ, जिसे खरीदाबेचा जाय। मैं स्त्री हूँ स्त्री की तरह ही रहना चाहती हूँ। पर बापू, घबराना नहीं ! तुम्हारी कम्मो कोई ऐसा काम नहीं करेगी, जिससे खानदान की इज्जत को बट्टा लगे।''[36] कम्मों अपनी रक्षा करना खूब जानती है, इसलिए अपने पास चाकू भी रखती है।

तात्पर्य - पुरुष और समाज द्वारा लादे गये बंधनों से मुक्त होने की राह नारी को दिखाई है। साथ ही महिलाओं को स्वतंत्र आत्मविश्वास के साथ खुद की रक्षा करने की व जीने की प्रेरणा दी है।

2.6.11 कंकाल :

प्रस्तुत कहानी दिल्ली के वेश्या व्यवसाय करनेवाली स्त्रियों का मनोवैज्ञानिक चित्रण करती है।

दिल्ली के सुहावने दृश्य देखने के बाद लेखक को एक बूढ़ा व्यक्ति जबरदस्ती वहाँ लेकर जाता है। जहाँ बेहद गंदगी बदबू, गंदी नाली बहती है जिसकी दुर्गंध से लेखक का सिर फटा जाता है। एक फटी-पुरानी झोपड़ी में उसने कदम रखा, बिल्कुल खाली, गंदी और सीलन भरी जिसमें लेखक का दम घुटने लगा। वह बूढ़ा आदमी लेखक से पचास रूपये लेकर बाहर जाता हैं। अचानक

झोपड़ी के मध्य टंगा टाट का मैला कपड़ा हटाकर एक औरत बाहर आती हैं। लेखक बाहर जाने लगता है, तो वह औरत पैर पकड़कर कहती हैं ''मत जाइये, बाबूजी, मत जाइये। आपके पांव पड़ती हूँ। न जाने मेरी जली शक्ल को क्या हुआ है। सभी इसी तरह चले जाते हैं और बाबा मुझे पीटते हैं।''[37]

लेखक को बूढ़े व्यक्ति पर गुस्सा आता है, थोड़ी देर में बूढ़ा हाथ में रोटी लेकर आता है, 'टाट का परदा' उठता है, बूढ़े के हाथ की रोटी देखकर एक औरत और तीन बच्चे उस पर झपकते हैं। जिन्हें देखने के बाद उन्हें कोई नहीं कहेगा कि वह जिन्दा लोग है। वह ऐसे नर कंकाल दिखाई दे रहे थे, मानों कितने दिनों से उन्हें खाना मिला न हो। लेखक स्तब्ध, खामोश उनकी ओर सिर्फ देखता रहता है।

तात्पर्य - लेखक ने दिल्ली के उस गली का चित्रण किया है, जहाँ भूख से पीड़ित लोग रहते हैं। पेट की आग बुझाने के लिए बेटी से वेश्या व्यवसाय करनेवाला बाप चित्रित किया है।

2.6.12 कुटिलजी की देश सेवा :

धर्म के नाम पर लोगों में दंगे-फसाद करनेवाले नेताओं का दुमुँहा व्यक्तित्व चित्रित किया हैं।

कहानी का पात्र कुटिलजी कट्टर धार्मिक और प्राचीन संस्कृति को माननेवाले व्यक्ति हैं, राजनीति के बड़े दल का नेता है और कम्युनिस्ट को अपना विरोधक मानता हैं। वह मनुस्मृति का अध्ययनकर्ता तथा समर्थक है। एक दिन अपने स्वार्थ के लिए मंदिर में चील तथा कौओं को मारकर हिंदुओं के मन में मुस्लिमों के लिए नफरत पैदा करता है। दूसरी तरफ मुस्लिम लोगों की आत्मीयता, सहानुभूति पाने के लिए 'अहमद' नामक मुस्लिम नेता से दोस्ती करने का दिखावा करता है। इस तरह भले-बुरे मार्ग, कुटनीति के सभी तत्वों को अपनाकर अपना स्वार्थ तथा कुर्सी हासिल करने का प्रयास कुटिलजी करता है। हिंदू-मुस्लिम लोगों में सांप्रदायिक झगड़ों के कारण जो भी नुकसान होता उन्हें आर्थिक मदद करके वोट पाने का प्रयास किया जाता है। और जब ऐसी भयानक घटनाएँ शहरों में होनेवाली होती है तो कुटिलजी ''भगवान शंकर के दूध बादाम मिले भंग के प्रसाद का लोटा

चढ़ाकर ऐसे निश्चिंत सो रहे थे, जैसे परीक्षा समाप्त होने के बाद विद्यार्थी सोता है।''[38]

तात्पर्य - अपने स्वार्थ के लिए जान-बूझ कर दंगे फसाद करनेवाले भ्रष्ट राजनैतिक लोगों का दूमुँहा व्यक्तित्व चित्रित किया है। ऐसे ही भ्रष्ट नेताओं का प्रतिनिधित्व 'कुटिलजी' करते है।

2.6.13 पतिता :

प्रस्तुत कहानी में सामाजिक नैतिकता की दृष्टि से पतिता नारी में भी मानवीय सहानुभूति, प्रेम, वात्सल्य, अपनापन होता हैं। समाज में झूठी नीतिमत्ता नैतिकता दिखानेवाले, अपने आपको प्रतिष्ठित समझनेवाले लोगों पर कटु व्यंग्य प्रहार किया हैं।

समाज में सम्मानित उँचे लोग सामान्य लोगों के प्रति किसी भी प्रकार की दया, करूणा, प्रेम की भावना, संवेदना नहीं रखते, उन्हीं लोगों को प्रतिष्ठित समझा जाता है और जो लोग उपेक्षित होते हुए भी शोषितों के प्रति प्रेम, मानवता, सहानुभूति के भाव रखते हैं उन्हें पतिता तथा घृणित नज़रों से देखा जाता है। कहानी में ऐसी ही एक उपेक्षित 'पतिता' है। समाज के प्रतिष्ठित समझे जाने वाले लोग उसके संदर्भ में अश्लिल बातें कहते हैं, ताने देते हैं। चौदह साल का जीतू सोच में पड़ जाता है और उन्हें टोक देता है। लेकिन इन सब बातों का उन पर कोई असर नहीं पड़ा। जीतू 'पतिता' के बेटे से खेलने उसके घर जाने लगता है। उनकी घनिष्ठता बढ़ती जाती है।

एक दिन जीतू की माँ का खत आता है कि साठ साल का सहूटी साहूकार कर्जे के बदले तेरी बड़ी बहन से शादी करना चाहता है। ''बेटा, मैं बहुत उलझन में फंस गयी हूँ। साहटुओं को न करती हूँ तो घर-बार कुरक कटवा लेंगे। और अपने हाथों धी (बेटी) को कुलं में कैसे धकेल दूं।''[39] पत्र 'पतिता' को दिखाकर जीतू रोने लगता है, पतिता उसे समझाने लगती हैं।

जीतू हर जगह जहाँ से पैसे मिल सकते है, वहाँ से कोशिश करता है। लेकिन कहीं से भी पैसों का इंतजाम नहीं होता। जीतू हारकर उदास होता है।

उसी समय पतिता उसके माँ को पाँच सौ रूपये भेजकर मदद करती हैं।

तात्पर्य - 'पतिता' के दिल में मानवीय सहानुभूति, इंसानियत, रहम है लेकिन जो समाज में प्रतिष्ठित, सम्मानित लोग समझे जाते है, उनके मन में मानवीयता की भावना ही नहीं होती।

2.6.14 तेल का कनस्तर :

प्रस्तुत कहानी में सामान्य लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी चित्रित है।

कहानी का नायक प्रतिष्ठित सुख सुविधाओं से संपन्न जीवन जीना चाहता है परंतु समाज तथा भ्रष्ट नीति जात-पात, उँच-नीच के भाव उसे रहने नहीं देते।

रेशमा, उसका पहला प्यार जिसे समाज की रूढ़िवादी नियमों, बंधनों के कारण तोड़ना पड़ता है। इंस्पेक्टर की लिखित परीक्षा में प्रथम श्रेणी में आता है लेकिन इंटरव्यू में पार्सेलिटी की जाती है, प्रमोशन के लिए उसका नंबर आया, उसी समय उस पर केस फ्रेम हो गया और प्रमोशन रूक गया। फिर बाद में पता चला कि चार्जशीट दिलवाने, उस आदमी का हाथ था जिसका नंबर उसके बाद था। आज भी वह तेल लेने आता है, उसका नंबर आने पर तेल भी खत्म होने लगता है।

डॉक्टर ने उसे चिंता करने के लिए मना कर दिया हैं, चिंता है कि उसे छोड़ती ही नहीं। वह मन ही मन बड़बड़ाने लगता है,"... चिंता तुम्हारे लिए जहर के समान है...। पर खाना कैसे बनेगा? कोयला भी नहीं मिल रहा है और लकड़ी जलाने से मकान मालिक नाराज होगा।"[40] उसी समय दिल के दौरे से उसकी मौत हो जाती है। उसके पास तेल का खाली कनस्तकर उसके जीवन के खालीपन की गवाही देता हुआ उसके पास पड़ा है।

तात्पर्य - कहानी में तेल का कनस्तर सामान्य आदमी के खालीपन का प्रतीक है। आज सामान्य मनुष्य आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक समस्या से त्रस्त, पीड़ित है, जिसका सामंतवादी, पूँजीपति वर्ग ऐन केन प्रकार से शोषण करते रहते है; इसका

यथार्थ चित्रण कहानी में मिलता है।

निष्कर्ष :

अतः कहा जाता है कि 'कथ्य' कहानी का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तत्व हैं। वास्तव में कथावस्तु ही कहानी का मूल आधार है। जिसमें रोचकता, विश्वसनीयता, उत्सुकता, प्रभावान्विति व भावान्विति, नवीनता, गतिशीलता, शिल्पगत नए प्रयोग आदि गुणों का होना अनिवार्य है।

कथानक के क्रमिक विकास के आधार पर पाश्चात्य समीक्षकों ने प्रारंभ, विकास, चरमसीमा, निगति और अंत नामक पाँच स्थितियाँ महत्त्वपूर्ण मानी है।

'कथ्य' के आधार पर साधुराम दर्शक की कहानियाँ सार्थक तथा परिपूर्ण हैं। उनकी कहानियाँ प्रेमचंद की आदर्शोन्मुख यथार्थवादी परंपरा को आगे बढ़ानेवाली है। उसमें आम व्यक्ति की पीड़ा, कसमसाहट, वेदनानुभूति, शोषण, त्रासदी आदि समस्याओं के साथ उच्चवर्ण एवं उच्चमध्य वर्ग का दुमुहाँपन आचरण व व्यवहार आदि का चित्रण किया है। प्रशासकीय वर्ग द्वारा शोषण, अन्याय, अत्याचार, नारी शोषण, बेरोजगारी, निर्धनता, महँगाई, बेकारी, सांप्रदायिकता, अंधविश्वास आदि का उद्घाटन हुआ है। लेखक ने कहानियों के 'कथ्य' का सृजन नाटकीय ढंग के साथ लेकिन स्वाभाविकता से किया है। जिससे 'कथ्य' में मार्मिकता, संवेदनशीलता, भावनाओं की उत्कटता, सरलता, सहजता, स्वाभाविकता दृष्टिगोचर होती हैं।

'मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ' कहानी संग्रह की कहानियों में वास्तविक जीवन के फलक पर संवेदना के विभिन्न पहलुओं का अंकन यथार्थवादी दृष्टि से हुआ है। आर्थिक समस्या के कारण इंसान अपने वजूद को मिटा देता है तथा आर्थिक अभाव व्यक्ति को कितना खुदर्गज और कमीना बना देता है; इसका मार्मिक चित्रण कहानियों में हुआ है।

'डायन', 'चार्ज-शीट', 'पर कटी तितली' आदि कहानियों में नारी शोषण के विविध अंगों पर प्रकाश डाला गया है। आज समाज में महिलाओं को

जिन कठिन, क्रूर और क्लेशपूर्ण परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है, इसका भी मार्मिकता से उद्‌घाटन हुआ है। 'कुत्ता-जिंदगी', 'विडंबना' आदि कहानियों में बेकारी से निराश हुए आज के युवक का यथार्थ चित्रण है। 'नन्हा गुलाब, बूढ़ा खार', 'पंछी बाबा', 'जिन्दा-मुर्दा' आदि कहानियों में मानवीय संवेदनाओं के साथ सांप्रदायिक समस्या का उद्‌घाटन किया है। 'एक पोटली अनाज', 'कंकाल हँसता है', आदि कहानियों में पूँजीपतियों से शोषित लोगों की दर्दनाक जिंदगी का चित्रण हुआ है, इसके साथ जातिय विद्वेष के भयंकर परिणामों की अभिव्यक्ति पाई जाती हैं। 'शाही-खेल' कहानी में पुलिस-राजनेताओं की मिली भगत से सामान्य जनता के शोषण का उद्‌घाटन हुआ हैं। 'मनहूस' कहानी में उपेक्षित इंसान का मनोवैज्ञानिक ढंग से अंकन है। 'सांपन' कहानी मां की आंतरिक पीड़ा को उद्‌घाटित करती है।

'एक और सावित्री' कहानी-संग्रह में 'एक और सावित्री', 'नये युग की यक्षिणी', 'चन्द्रकिरण' आदि कहानियाँ नारी के श्रद्‌धा, परिश्रम, आत्मनिर्भरता, अर्थनिर्भरता का उद्‌घाटन करती हैं। 'माँ के आँसू' कहानी में बाल-मनोवैज्ञानिकता को अंकित किया है। 'उदास पीला गुलाब' में दहेज के नाम पर ठगे गये शिक्षित महिला का मनोवैज्ञानिक चित्रण है। 'जिप्सी की तलाश' तथा 'बूचड़खाना' कहानी में बूढ़ों की समस्या का अंकन हुआ हैं। 'बला', 'बाबा-बरगद' आदि कहानियों में व्यसनाधीनता, खून के रिश्तों में बढ़ती दुरियाँ आदि का चित्रण हुआ है। 'धारा बहती रही' कहानी संग्रह में 'धारा बहती रही', 'अगले अप्रैल में...' आदि कहानियों में आज के युवा पीढ़ी की दुर्बल मनोवृत्ति का चित्रण हुआ है। 'दीवारे बोलती हैं', 'कंकाल' आदि कहानियों में दरिद्रता, गरीबी, अभाव की स्थितियों को उजागर किया हैं। 'अतीत', 'कितनी रात और....' कहानियों में सांप्रदायिक परिणामों को दिखाया है। 'असली हकदार' में मानवीय संवेदना को चित्रित किया हैं। 'कुटिलजी की देशसेवा' कहानी में राजनीतिक दाँवपेंच, नेताओं की स्वार्थी प्रवृत्ति का उद्‌घाटन हुआ हैं। 'तेल का कनस्तर' कहानी सामान्य आदमी के खालीपन का प्रतीक है। 'ट्राई साईकिल' कहानी निम्न मध्यवर्गीय परिवार की ट्रेजेड़ी को अभिव्यक्त करती है।

साधुराम दर्शक ग्रामीण तथा शहरी जीवन से परिचित है। इसलिए उनकी कहानियों में ग्रामीण तथा शहरी परिवेश का यथार्थ अंकन हुआ है। 'कथ्य' के आधार पर उनके कहानियों की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

व्यक्तिगत-सामाजिक स्तर पर सामान्य लोगों के होनेवाले शोषण की सशक्त अभिव्यक्ति मिलती है।

- निर्धनता, बेरोजगारी, बेकारी की समस्या का उद्‌घाटन हुआ है।
- समाज में विविध अंगो से होनेवाला नारी का शोषण तथा उनके परिणामों की भयानकता का वर्णन मार्मिकता से किया है।
- नारी का विद्रोह तथा शिक्षित नारी की समर्पणशीलता, सहनशीलता, आत्मनिर्भरता से संपन्न नीडर साहसी प्रवृत्ति को बढ़ावा देनेवाली नायिकाओं का अंकन हुआ है।
- प्रस्थापित व्यवस्था के प्रति सामान्य जनता का विद्रोह दिखाई देता है।
- सांप्रदायिक झगड़े तथा जातीयता के नाम पर शहर में होनेवाले दंगे-फसादों का वर्णन सजीवता से हुआ है।
- अंध-विश्वास तथा पुराने रीति-रिवाजों का यथार्थवादी चित्रण।
- आंतरजातिय प्रेम विवाह की समस्या से उत्पन्न हुआ अन्य परिणामों का चित्रण कहानियों में हुआ है।
- पारिवारिक समस्या तथा परिवार में स्थित वृध्दों की समस्या का अंकन करते हुए उनकी दयनीयता का मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रण हुआ है।
- सांप्रदायिक समस्या तथा उनके परिणामों से त्रस्त सामान्य जनता की विवशता का चित्रण दिखाई देता है।

संदर्भ सूची

1. उपेंद्रनाथ अश्क - हिंदी कहानी एक अंतरंग परिचय, पृ.23
2. प्रताप नारायण टंडन - हिंदी कहानी कला, पृ.262
3. डॉ.सुरेश सिंह - हिंदी कहानी उद्‌भव और विकास, पृ.22
4. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ, डायरी के कुछ पन्ने, पृ.22
5. वही, पृ.55
6. वही, पृ.67
7. वही, पृ.75
8. वही, पृ.82
9. वही,पृ.92-93
10. वही,पृ.95
11. वही, पृ.98
12. वही, पृ.103
13. वही, पृ.113
14. वही,पृ.116
15. वही,पृ.118
16. वही,पृ.119
17. वही, पृ.126
18. वही, पृ.130
19. वही, पृ.141
20. साधुराम दर्शक - एक और सावित्री - एक और सावित्री, पृ.17
21. वही; पृ.46
22. वही,पृ.52-53
23. वही,पृ.64
24. वही, पृ.73
25. वही, पृ.83
26. वही, पृ.89

27. वही, पृ.103
28. साधुराम दर्शक -धारा बहती रही - धारा बहती रही, पृ.4-5
29. वही, पृ.15
30. वही, पृ.17
31. वही, पृ.20
32. वही, पृ.39
33. वही, पृ.43
34. वही, पृ.49
35. वही, पृ.71
36. वही, पृ.76
37. वही, पृ.77
38. वही, पृ.80
39. वही, पृ.85
40. वही, पृ.90
41. वही, पृ.92
42. वही, पृ.97

*****